www.thearyasamaj.org

वेदों की ओर लौटो...!

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १६ अंक १२ १० दिसम्बर २०१६

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

प्रसिद्ध कर्मठ आर्यसेवी, प्रान्तीय सभा के पूर्व प्रधान
स्व. श्री कृष्णचन्द्रजी आर्य (पिंपरी-पुणे) को
भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

www.thearyasamaj.org

वैदिक विचारों के कट्टर अनुयायी,
प्रसिद्ध दानशूर आर्यसेवक,
प्रान्तीय सभा के संरक्षक, आर्य समाज
हिंगोली के प्रधान एवं दयानन्द
एज्यु.सोसायटी हिंगोली के अध्यक्ष
श्री गुलाबचंदजी घीसूलालजी
लदनिया के निधनपर उन्हें
भावभीनी
श्रद्धांजली...!

जीवेत् शरदः शतम्।

असंख्य विद्यार्थियों के नवनिर्माता
व प्रसिद्ध समाजसेवी व्यक्तित्व
पूज्य स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती
(हरिश्चंद्र गुरुजी) के ९८ वें
जन्मदिवस पर उनका अभिनंदन
करते हुए पूर्व सांसद, शिक्षाविद्
डॉ.जनार्दनरावजी वाघमारे ।

सोयगाव
(जि.औरंगाबाद) में
होनेवाले मराठवाडा
साहित्य सम्मेलन के
अध्यक्षपद पर
अविरोध चयनित
डॉ.वाघमारेजी का
अभिनन्दन करते हुए
सभा व आर्य समाज
रामनगर(लातूर)के
पदाधिकारी ।

www.thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११७ | कलि संवत् ५११७ | विक्रम संवत् २०७३
दयानन्दाब्द १९३ | मार्गशीर्ष | १० दिसम्बर २०१६

प्रधान सम्पादक
माधव के.देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२१९५११९०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - प्रा.देवदत्त तुंगार, प्रा.ओमप्रकाश होलीकर, प्रा.सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

✻ हिन्दी विभाग ✻

१) श्रुतिसुगन्ध ४
२) महाराष्ट्र के आर्यो ने प्रो.धर्मवीरजी को याद किया ६
३) विद्वानों ! आत्मपरीक्षण व विवेकजागरण जरुरी है !........ ७
४) अभिनन्दन समाचार १५
५) शोक समाचार १६

✻ मराठी विभाग ✻

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी........ १९
२) वरदक्षिणेच्या नावावर देव-घेवीचा बाजार........ २०
३) विद्यापीठांमध्ये 'दयानंद अध्यासन' स्थापन होणार........ २३
४) अजमेरचा ऋषिमेळा उत्साहात........ २४
५) तामसा आर्यसमाजाचा उद्घाटन सोहळा २६
६) शोकवार्ता २८
५) दोन राज्यस्तरीय निबंध स्पर्धा-सूचना........ ३३

✻ प्रकाशक ✻
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

✻ मुद्रक ✻
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

www.thearyasamaj.org

श्रुतिसुगंध

राजा व ईश्वर की सेवा कैसे?

त्वन्नौऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषँ रक्षमाणस्तव व्रते ।। (यजु.३४/१३)

पदार्थान्वय– हे (देव) उत्तम गुणकर्मस्वभावयुक्त (अग्ने) राजन् वा ईश्वर! (तव) आप के (व्रते) उत्तम नियम में वर्तमान (मघोन:) बहुत धनयुक्त हम लोगों की (तव) आपके (पायुभि:) रक्षादि के हेतु कर्म्मों से (त्वम्) आप (रक्ष) रक्षा कीजिए (च) और (न:) हमारे (तन्व:) शरीरों की रक्षा कीजिए । हे (वन्द्य) स्तुति के योग्य भगवन्! जिस कारण आप (अनिमेषम्) निरन्तर (रक्षमाण:) रक्षा करते हुए (तोकस्य) सन्तान पुत्र (तनये) पौत्र और (गवाम्) गौ आदि के (त्राता) रक्षक (असि) हैं। इसलिए हम लोगों को सर्वदा सत्कार और उपासना के योग्य हैं।

भावार्थ – इस मन्त्र में श्लेषालङ्कार है। जो मनुष्य ईश्वर को गुण, कर्म, स्वभावों और आज्ञा की अनुकूलता से वर्तमान हैं, जिनकी ईश्वर और विद्वान् लोग निरन्तर रक्षा करनेवाले हैं, वे लक्ष्मी, दीर्घावस्था और सन्तानों से रहित कभी नहीं होते ।

(महर्षि दयानंद कृत यजुर्वेद भाष्य से साभार)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

-: अन्तरंग सदस्यों की त्रैमासिक बैठक-सूचना :-

महाराष्ट्र प्रान्तीय सभा के अन्तरंग सदस्यों से निवेदन है कि, सभा की अन्तरंग त्रैमासिक बैठक आगामी रविवार दि.१ जनवरी २०१७ को प्रात: ११ बजे आर्य समाज मुदखेड (रे.स्टे.) जि.नांदेड में आयोजित की गयी है । सभाप्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी की अध्यक्षता में होनेवाली इस बैठक में नियमित विषयों के साथ ही सभा की वेबसाईट तैयार करना, अन्य आर्यसेवकों का गौरव, स्वामी श्रद्धानन्द जन्मशताब्दी समारोह, स्व.प्रो.डॉ.धर्मवीरजी स्मृति स्थिरनिधि संकलन आदि विषयों पर चर्चा होगी। अत: इस त्रैमासिक बैठक में सभा के सभी अन्तरंग सदस्य सम्मिलित होवें । (मुदखेड यह गांव नांदेड-धर्माबाद रेल्वे मार्ग पर है।)

– माधवराव देशपाण्डे, मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

www.thearyasamaj.org

महाराष्ट्र के आर्यों ने धर्मवीरजी को याद किया

परोपकारिणी सभा अजमेर के दिवंगत यशस्वी प्रधान प्रो.डॉ.आचार्य धर्मवीरजी के प्रति महाराष्ट्र की विभिन्न आर्य समाजों ने कृतज्ञभाव प्रकट भरते हुए भावभीनी श्रद्धांजलियां समर्पित की हैं। अपने साप्ताहिक सत्संगों में विशेष श्रद्धांजलि सत्रों का आयोजन कर आर्यजनों ने प्रो.धर्मवीरजी के विचारों व कार्यों को बडे आदरभाव के साथ याद किया।

डॉ.धर्मवीरजी महाराष्ट्र के भूमिपुत्र थे। इसलिए उनके प्रति आर्यजनों का विशेष लगाव होना स्वाभाविक था। प्रान्तीय सभा व आर्य समाजों द्वारा आयोजित विविध समारोह पर वैदिक व्याख्याता के रुप में यहां पधारने पर वे सभी से आत्मीयता पूर्वक मिलते थे। भविष्य में उन्हें कार्यक्रमों में आमन्त्रित करने की मनीषा अनेकों आर्य कार्यकर्ताओं ने रखी थी, किंतु बीच में ही यह दुर्घटना घटी... उनके आकस्मिक देहावसान से यहां के आर्यजनों को काफी आघात हुआ।

नान्देड, सोलापुर, लातूर, परली, पुणे, सम्भाजीनगर (औरंगाबाद), गुंजोटी, उदगीर आदि स्थानों की आर्य समाजों ने श्रद्धांजलि बैठकों का आयोजन कर अपने इस आत्मीय विद्वान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। प्रान्तीय सभा कार्यालय को शोक सन्देश भेजकर इन आर्य समाजों ने सम्वेदनाएं प्रकट की हैं। नान्देड के श्री देवदत्त तुंगार कहते हैं– 'एक कृतिशील विचारक, आर्य पत्रकार एवं आर्य जगत् के उज्ज्वल भविष्य को हमने खो दिया है, इससे हमारा काफी नुकसान हुआ है।' सोलापुर आर्य समाज के विद्वान् पं.राजवीरजी शास्त्री लिखते हैं– 'डॉ.धर्मवीरजी की ज्ञानसम्पदा अपूर्व थी। ओजस्वी वाणी, तेजस्वी लेखनी, मिलनसारिता व प्रचारकार्य में अहर्निश लगनशीलता के कारण उन्होंने सभी को प्रभावित किया था। वे आर्य समाज के प्राण, सजग प्रहरी व हमारी आशालता थे।' आर्य समाज, रामनगर (लातूर) के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं सभा के उपप्रधान श्री राजेन्द्र दिवे कहते हैं – 'डॉ.धर्मवीरजी हर विषय के ज्ञाता थे। उनके द्वारा लिखे गये सम्पादकीय लेखों से पाठकों को सदैव नई ऊर्जा मिलती थी।' सम्भाजीनगर के मन्त्री व सभा के उपप्रधान श्री दयारामजी बसैये बताते हैं – 'श्री धर्मवीरजी एक ऐसे दार्शनिक मनीषी थे, जिन्होंने आध्यात्मिक विचारों को बडी आसानी से श्रोताओं के हृदय तक पहुंचाया।'

आर्य समाज, वारजे-पुणे के सदस्य तथा सभा के उपमन्त्री श्री लखमसीभाई वेलानी, जो कि स्व.धर्मवीरजी के अन्तिम दर्शनार्थ अजमेर पहुंचे थे। उन्होंने बताया

www.thearyasamaj.org

कि 'प्रो.धर्मवीरजी जैसा वेदवित्, प्रखर तत्त्ववेत्ता व विरोधी विचारों का खण्डन करनेवाला तार्किक विद्वान् मिलना आज दुर्लभ है।' पिम्परी-पुणे आर्य समाज के प्रधान भी मुरलीधरजी सुन्दरानी बताते हैं - 'डॉ.धर्मवीरजी का अचानक चले जाना आर्य जगत् पर बहुत बडा वज्राघात है।' धुलिया के श्री योगमुनिजी ने कहा - 'धर्मवीरजी का क्रियाशील व्यक्तित्त्व, ऋषिमिशन के प्रति उनका समर्पण व त्याग हम सभी को अचम्भित करनेवाला था।' उदगीर के प्रो.अर्जुनराव सोमवंशी लिखते हैं- 'प्रो.धर्मवीरजी का वेदप्रचार करते-करते हुआ प्राणोत्सर्ग यह एक तरह से वह बलिदान था, जिसने उदगीर के आर्य क्रांतिकारी भाई श्यामलाल की बलिदानी परम्परा को जीवित रखा है, क्योंकि पं.धर्मवीरजी उदगीर परिसर के ही निवासी थे। उन्होंने बचपन से ही सत्यनिष्ठा का पालन बडी दृढता के साथ किया।'

उदगीर के श्यामलाल स्मारक विद्यालय में अध्यापनरत प्रो.धर्मवीरजी के अनुज श्री प्रकाशवीरजी ने बताया कि, 'हमारे भाई आर्य जगत के शिरोमणी विद्वान थे। उनके चले जाने से हमारे परिवार का नुकसान भले ही कम हुआ, लेकिन समग्र आर्य जगत् का सर्वाधिक नुकसान व बहुत बडी क्षति हुई है। ऐसे भ्राताश्री पर मुझे और मेरे परिवार को गर्व है।' आर्य समाज परली के प्रधान श्री जुगलकिशोर लोहिया ने बताया- 'डॉ.धर्मवीरजी का परली के प्रति स्नेहशील सम्बन्ध रहा है। उनके पिता स्वा.सै.श्री पं.भीमसेनजी का कुछ दिनों तक यहाँ के आश्रम में ही निवास था। उन्हीं के भाँति प्रो.धर्मवीरजी भी सत्य के प्रबल पक्षधर थे।'

लातूर के लेखक प्रो.ओमप्रकाशजी विद्यालंकार (होलीकर) कहते हैं- 'वैदिक तत्त्वों के सम्यक् प्रतिपादन के साथ ही सम-सामयिक विषयों पर बडी तर्कपूर्ण शैलीद्वारा भाष्य करनेवाले डॉ.धर्मवीरजी एक अद्वितीय वैदिक प्रवक्ता, प्रबुद्ध लेखक व साहसी सम्पादक थे।' सभा के संरक्षक तथा प्रसिद्ध समाजसेवी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्दजी ने अत्यंत दुःखपूर्ण अन्तःकरण से अपनी सम्वेदनाएं प्रकट की। उन्होंने कहा- 'यह क्या हुआ...! ईश्वर को क्या यही मंजुर था कि उसने धर्मवीरजी जैसे सुयोग्य, धैर्यधुरन्धर, वैदिक ज्ञाता को हमसे छीन लिया। पिता श्री भीमसेनजी की तरह वे निडर, स्वाभिमानी विचारों व तत्त्वों के पक्के व परम ऋषिभक्त विद्वान थे। उन जैसा दिव्य आर्य व्यक्तित्त्व अब होना असम्भव है।'

इसी तरह अन्य आर्य समाजों ने भी अपनी ओर से प्रो.डॉ.धर्मवीरजी को स्मरणांजलियाँ समर्पित की हैं।

***

www.thearyasamaj.org

विद्वानों! आत्मपरीक्षण व विवेक जागरण जरुरी है

– डॉ.ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरुदक्षिणा के रुप में अपना पुरा जीवन मानवमात्र के कल्याण के लिए लगाया । कडी तपश्चर्या करते हुए जीवनभर उन्होंने अनेकों यातनाएँ सही । योगाभ्यास करके वेद के शाश्वत ज्ञान के आधार पर उन्होंने समग्र विश्व को सुख, शांति और आनंद का रास्ता बता दिया। साथ ही अज्ञान व अविवेक को ही दुःख, अशांति, बिमारियाँ व मृत्यु का कारण बताया। परमात्मा ने सृष्टि का निर्माण आत्मकल्याण के लिए किया और वेद की रचना भी इसी उद्देश्य से की । मनुष्य योनि को विशेष शरीर, विशेष बुद्धि, विशेष स्वतंत्रता प्रदान की है और यह परम्परा जारी रखी । ईश्वर ने प्रारम्भ में चार ऋषियों को वेदज्ञान दिया और आगे भी वेदों का वह सत्य ज्ञान मानवमात्र के कल्याण के कल्याण हेतु देते रहने का काम भी मानवपर सौंप दिया । लाखो वर्षों तक यह ऋषि परम्परा निर्भ्रान्त चली आ रही है । मानव ऋषि बनकर ईमानदारी से वेद ज्ञान को सुरक्षित रखे, उसके सम्यक् अर्थ भी सुरक्षित रखे और सृष्टि के पदार्थों का सदुपयोग करें, इसकी विद्या भी बढाई । ऋषि परम्परा तक वेद का ज्ञान आत्मकल्याण के लिए सुरक्षित रहा, तब तक सारे विश्व में सुख, शांति, आनंद और ऐक्यभाव चलता रहा । चक्रवर्ती राज्य भी विद्यमान रहा।

ऋषि परम्परा खत्म होने के बाद आचार्य परम्परा चल पडी और वेदों को अपौरुषेय मानकर वेद का पठन-पाठन चलता रहा। संहिंताएं सुरक्षित रखी । इसके लिए अनेकों ने अपना जीवन लगाया । परंतु योगाभ्यास की कमी के कारण, ईश्वर का सान्निध्य कम होने से परमात्मा द्वारा वेद ज्ञान प्रदान करने का उद्देश्य व आत्मकल्याण का प्रयोजन दूर रहा। मानव अपनी बुद्धि तथा व्यवहार से परिस्थिति के अनुरुप वेदों के अर्थ लगाते रहा। तथा शाश्वत सत्य के नाम पर असत्य विचार भी लोगों को देता रहा । यह काम बहुत आसानी से चलता रहा, फिर भी ये आचार्य लोग समाज में प्रतिष्ठा और आदर तथा सन्मान पाते ही रहें । लोगों में अज्ञान व अविद्या बढती रही । कुप्रथाएँ व संकीर्णताएँ वृद्धिंगत होती रहीं । वेदों के ही शब्द लेकर उसे शास्त्र बताकर सामान्य लोगों में वेद के नाम पर वे ही शब्द रखकर अर्थ विनियोग व व्यवहार बदल दिए गये । अपनी गलतियाँ छुपाकर प्रतिष्ठित रहने के लिए अलग-अलग साहित्य का निर्माण किया गया और आज ईश्वर के नाम पर जडपूजा, धर्म के नाम पर

www.thearyasamaj.org

अधर्म, सत्य के नाम पर असत्य, श्रद्धा के नाम पर अश्रद्धा, नीति के नाम अनीति, अध्यात्म के नाम पर पाखंड, दया के नाम पर क्रूरता, सदाचार के नाम पर दुराचार आदि बातें आ गयी; साथ ही सारे संसार में अनेकों मत-मतांतर, जातिंभेद बढ गये । इन मत-पंथों में अपने विचारों को बढाने व अपना साम्राज्य स्थापित करने की लालसा शुरु हुई ! यह सब कुछ धर्म के नाम पर ही ! आत्मकल्याण का रास्ता छोडकर ये मजहबी लोग कहाँ से कहाँ जा पहुँचे? इन सभी में माता-पिता, आचार्य, विद्वान् आदि लोग सत्य ज्ञान की दृष्टि से सभी अज्ञान, अंधविश्वास आदि के शिकार बन गए। इसी कारण यह देश सात सौ वर्षों तक गुलाम रहा । यह गुलामी किनकी कृपा से ? यह तो समाज को वैचारिक दिशा देनेवाले विद्वान लोगों के कारण ही ! ऋषि परम्परा टूटने के कारण ही ! आचार्य और विद्वानों के बिगडने के कारण ही ! ये सभी विद्वान लोग गलतियाँ भी करते रहें और मान-सम्मान और प्रतिष्ठा भी प्राप्त करते रहे । सामान्य लोगों से सेवा भी लेते रहे । लोगों को गलत रास्ते बताकर हजारों साल अविद्या के चक्कर में डालकर आपस में लडाने हेतु प्रयास करते रहे । तो भी ये विद्वान् ही थे! क्या सचमुच यह परमात्मा के यह सच्चे भक्त थे ? क्या इन्होंने ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को जाना था ? केवल व्याकरण जानने से, वेदपाठ करने से, मंत्र या स्तोत्रगान करने से वेद का सही अर्थ मालूम नहीं होता, वह तो केवल विवेक के द्वारा ही होता है। महर्षि दयानंद ने ईश्वर से अपना सीधा नाता जोडा था । अपनी आत्मा से परमात्मा के साथ उन्होंने संबंध स्थापित किया था। ईश्वर की सृष्टि व्यवस्था को जानकर उन्होंने विवेक जागृत कर लिया था । सृष्टि तत्त्वों का उन्होंने प्रात्यक्षीकरण किया और ईश्वर को ही पहला गुरु मानकर उनके गुण, कर्म, स्वभाव और उद्देश्य तथा उसकी शासनव्यवस्था, न्यायव्यवस्था को प्रत्यक्ष सृष्टि में देखकर और शाश्वत सत्य ज्ञान को जानकर पुन: एकबार दुनिया को एकत्र करने का आत्मकल्याण का रास्ता प्रशस्त किया।

ऋषि परम्परागत वेद के ज्ञान को हिंदी (आर्य भाषा) में सब के लिए खुला किया । सत्य, धर्म, ईश्वर-विश्वास, श्रद्धा, योगाभ्यास, स्तुति, प्रार्थना, उपासना, यज्ञ, वर्णव्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, योगाभ्यास आदि-आदि का यथार्थ ज्ञान सबके सामने रखकर दुनिया के विद्वानों को सत्य ग्रहण करने के लिए आवाहन किया। संसार के मानवमात्र से अनुरोध किया कि- 'ऐ, संसार के विद्वानों ! एक हो जाओ, सत्य को सत्य और असत्य-असत्य ही समझो और दुनिया का भला करो, क्योंकि विद्वानों के कारण ही संसार में सारे मत-मतान्तर, झगडे,

समस्याएँ व दु:ख आ खडे हैं ।

ऋषि दयानन्द ने सम्पूर्ण विश्व को मानव बनाने का कार्यक्रम प्रदान किया। मानवमात्र के लिए आचारसंहिता का सृजन किया। मनुष्य पक्षपातरहित, सत्याचरणी, नीतिवादी, धर्ममार्गी बनें और सबका सर्वकाल हित होवें, इसी के लिए वह जीवनयापन करता रहे, यह सन्देश ऋषि ने दिया। ये सभी बातें विद्वानों को विशेष रुप से लागु होनी चाहिए । वेदभाष्य करते समय महर्षि ने वैदिक शब्दों के प्रयोग- 'राजा वा विद्वान्, सेनापति वा सभापति...' ऐसे संबोधन में किये हैं । इसके पीछे का रहस्य यह है कि परमात्मा का जो मूल उद्देश्य, शासन व न्याय है, वह आज भी सृष्टिक्रम व वेदों में विद्यमान है, उसके अनुसार परमात्मा का काम इन आचार्य व विद्वान लोगों को सबके सर्वकाल हित में करना चाहिए तथा अज्ञान व बुराई का निवारण करते रहना चाहिए।

आर्यजगत् के विद्वान आज महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज का नाम लेकर उपर्युक्त उद्देश्यानुसार चिंतन करते दिखाई नहीं दे रहें। न ही उनका ऋषि के अनुकुल विचार है और न ही कृति ! केवल लोगों द्वारा प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए, मान-सन्मान मिलना चाहिए, दक्षिणा मिलनी चाहिए आदि उद्देश्यों को लेकर इनके प्रयास जारी हैं। जब इसकी पूर्तता नहीं होती, तब वे पौराणिक बन जाते हैं। पौरोणिकों में दक्षिणा, मान-सन्मान, सेवा अधिक मात्रा में मिलती है । इसलिए उधर जाकर उन्हें खुश करने के लिए अज्ञान का प्रचार करना, यह कितना उचित है ? वेद, मनु व शास्त्र कहते हैं- 'विद्वानों को एक तो परमात्मा के विरुद्ध बोलना नहीं चाहिए और न ही लोगों को गलत रास्ता बताना चाहिए ।'

विद्वानों को सदैव अपना आत्मपरीक्षण करना चाहिए । अपनी आत्मा के विरुद्ध तथा परमात्मा के उद्देश्य, शासन व न्याय के विरुद्ध कभी भी वर्तना नहीं चाहिए । आत्मनिरीक्षण करते हुए कभी गलती महसूस हुई, तो उसका दंड स्वयं को लेना चाहिए और वह दंड है – 'प्रश्चाताप या प्रायश्चित करना! और फिर से गलती न होवे इसलिए व्रत धारण करना ।' सम्प्रति ऐसे प्रायश्चित आदि बातें तो कोई विरले ही विद्वान करते होंगें । दुनिया में बिगाड ही न आवे, इस उद्देश्य से न्यायव्यवस्था की स्थापना में महर्षि मनु महाराज ने कहा था- 'विद्वानों विशेषकर ब्राह्मणों तथा राजाओं, सेनापति-सभापति आदि लोगों को अधिक से अधिक कडा दंड होना चाहिए । क्योंकि इनकी गलतियों के कारण ही व्यक्ति, समाज, देश व मानवमात्र को अनेकों पीढियों तक दु:ख व कष्ट भोगने पडते हैं। तो क्या इस तरह कोई विद्वान् आत्मपरीक्षण कर रहा है? अपनी गलतियों को टटोल रहा है?'

हजारों वर्षों के बाद महर्षि दयानंद ने ऋषि परम्परा उद्घाटित की । आर्य समाज रुपी वाटिका लगाकर उसकी रक्षा का भार विद्वानों पर सौंप दिया। ऋषि परम्परा, वेद परम्परा, ईश्वरीय व्यवस्था आदि समझकर सब के सर्वकाल कल्याण और आत्मकल्याण का मार्ग आनेवाली पीढियों व सम्पूर्ण विश्व को अपनी वाणी, लेखनी व आचरण से प्रशस्त करना है । किंतु आज सब कुछ उलटा ही दिखाई दे रहा है । आज आर्य जगत् के विद्वानों में एकता नहीं है । ऋषि दयानन्द के लिखे ग्रंथों को ही बदलने की कोशीश हो रही है । महर्षि के उद्देश्यों, भाव तथा उनकी व्यापकता को आज के विद्वान् लोग परिस्थिति के अनुसार बदलना चाह रहे हैं। ये ज्ञानी लोग शाश्वत सत्य से, वेदज्ञान व सृष्टिक्रम से दूर जा रहे हैं । पक्षपाती बनते दिखाई दे रहे हैं । महर्षि दयानन्द के बताये हुए शाश्वत सत्य के रास्ते से ये विद्वान लोग भटक रहे हैं । ऋषि ने कहा था- "सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।" आज इसका प्रयोग सत्यवादी व असत्यवादी ये दोनों भी लोग कर रहे हैं । इसीलिए आज सर्वत्र झगडे, गुटबाजी,कोर्ट कचहरी आदि चालू है । आगे ऋषि दयानन्द ने यह भी शाश्वत सत्य बताया कि हर एक की आत्मा सत्य और असत्य का निर्णय करनेवाली होती है । किन्तु स्वार्थ, छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष से वह असत्य की ओर झुक जाती है। तो क्या विद्वानों की आत्मा मृतप्राय हो गयी है ? स्पष्ट है कि जो लोग ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट, स्वार्थ आदि में लगे रहते हैं, वे असत्य का ही पक्ष लेते हैं। आज हमारे अधिकतर विद्वान केवल शाब्दिक हो गए हैं । बडे-बडे व्याख्यान व प्रवचन देना, वेद, उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति आदि शास्त्रों की बातें बडे जोश के साथ बताते रहना, किंतु आचरण कुछ भी न करना, ऐसा ही प्रायः देखा जा रहा है । जो विद्वान स्वयं की आत्मा को नहीं जानते, सच्चे परमात्मा को नहीं समझते व उसका सान्निध्य पाकर संबंध नहीं जोडते, ईश्वर की सृष्टि व्यवस्था को नहीं जानते, न्याय व्यवस्था पर भी विश्वास नहीं करते, ऐसे विद्वान सच्चे विद्वान हो ही नहीं सकते । एक बार मैंने किसी बडे वैदिक प्रवक्ता से पूछा - "पंडितजी ! क्या आप प्रतिदिन ईश्वर का ध्यान करते हैं? क्या आत्मा व परमात्मा को आपने जान लिया है ?" तब उन्होंने अपनी प्रामाणिक बात कही, जिसे सुनकर मैं हैरान रह गया । उन्होंने उत्तर दिया - "महोदय, मेरी ईश्वर के ध्यान में रुचि ही नहीं है! क्या करुं ? मैं अंतर्मुख हो ही नहीं सकता ।" अब बताइए ऐसे विद्वानों का विवेक कैसे जागृत होगा ?

आज नीति, न्याय, सच्चरित्रता आदि बातों के आचरण के विषय में भी विद्वानों में कमी आ रही है । आर्य जगत् की

www.thearyasamaj.org

अनेकों समस्याओं पर विद्वानों में एकता नहीं है और ईर्ष्या-द्वेष के साथ एक-दुसरों पर गलत-नाजायज आरोप लगा रहे हैं और कुछ विद्वान लोग उनका पक्ष भी ले रहें हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कें निर्वाचण के समय कुछ गडबडी हो गयी, ऐसा बताकर समांतर दूसरी सभा बनायी गयी, तब हमने गुरुकुल आमसेना के वार्षिकोत्सव पर सभी से अनुरोध किया था कि, आप लोग समांतर सभा के चक्कर में न जाते हुए निर्वाचण के विरुद्ध कोर्ट में चुनौती दे दो, अन्यथा तीन वर्ष तक शान्त रहो। आनेवाले निर्वाचन में आप जैसा फैसला कर लो, किंतु किसी ने इस बात पर सहमति नहीं दर्शायी। आज २०१६ वर्ष चल रहा हैं, किन्तु सार्वदेशिक झगडा अभी भी खत्म नहीं हो रहा है। बलात् कब्जा किया गया और वह भी अनैतिक, असंवैधानिक रीति से ! ऐसा होते हुए भी इसी को सही बताना कितना योग्य है? बडे-बडे विद्वान् सन्यासी भी इस घटना के समर्थन में खडे हो गये, यह किस बात का निदर्शक है ? विद्वानों के असत्य, अनैतिक व अधर्म के पक्ष लेने के कारण ही इस प्रकार के झगडे बढते हैं।

स्वामी अग्निवेश ने सिखों की नाराजगी दूर करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश में संशोधन करने की घोषणा की। इसके लिए संशोधन समिति गठित करने का निर्णय लिया। इसका परोपकारिणी सभा के तत्कालीन मंत्री प्रो.धर्मवीरजी व अन्य विद्वानों ने जमकर विरोध किया। यह मामला ऋषि दयानन्द के हत्यारे अग्निवेश पर नहीं तो धर्मवीर पर ही आया। विद्वानों में गुटबाजी हुई। विवाद चलते रहा। फिर अब तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में संशोधन हुआ नहीं क्या ? यह बताकर आम लोगों में भ्रम निर्माण किया गया। संशोधन करने विषय में मूल्यमापन गलत ढंग से किया गया। इस विषय में जब हेतु और परिणाम को देखा ही नहीं गया, तब विवेक की बात कहाँ रही ?

१) संशोधन ऋषि दयानन्द के मन्तव्य के अनुसार, उद्देश्यों व भाव को ध्यान में रखकर तथा सबके सर्वकाल हित व मानवतावादी दृष्टिकोण सामने रखकर कुछ दुरुस्ती के लिए करना चाहिए था।

२) पंथवाद, जातिवाद, अपने-अपने धर्मग्रंथानुसार असत्य, जिन्हें कि म.दयानंद ने मिथ्या बताया था, उन्हें हटाकर उस असत्य को सत्य में प्रमाणित करके दयानंद के ग्रंथ में ही संशोधन करना क्या यह उचित है ? आगे चलकर 'सभी पंथवादी लोग नाराज हो जाऐंगे?' इसलिए क्या ११ से १४ तक के समुल्लासों को ही हटा देंगें ? क्या यह विचार विवेकपूर्ण है ? क्या इससे मानवमात्र कल्याण होगा? क्या ये

विचार ऋषि दयानन्द के मानवतावादी, एक ईश्वर, एक धर्मग्रन्थ, एक धर्म, एक जाति व एक जीवनलक्ष्य के अनुसार पोषक है ? फिर इन्हें भी विद्वान लोग प्रमाणित करते हैं, उनका ही पक्ष लेते हैं, यह सरासर गलत है । पहले पक्ष को गलत बताना और इसे ही दयानन्द का हत्यारा बताना क्या विवेकपूर्ण बात है? इस पर आप ही सोचें!

कोई माता-पिता या आचार्य अपने बच्चों वा शिष्यों को शिक्षा देते हैं, तो उन बच्चों की गलतियाँ सुधारने के उद्देश्य से ही! दूसरा कोई पिटता है, तो ईर्ष्या द्वेष की भावना से! और तिसरा कोई पिटाई करता है, तो स्वार्थ सिद्धि के लिए और चौथा ऐसा करता है, तो अच्छाई को नष्ट करने के लिए! अब तिसरे और चौथे लोगों की संख्या अधिक हो गयी है, तब विद्वानों व तज्ज्ञ लोगों ने सुझाव दिये और कानून बन गया कि माता-पिता व आचार्यों ने बच्चों को शिक्षा ही नहीं देनी। यदि कोई मारता है या पिटाई करता है तो वह दंडित होगा । अब बताईएगा कि इससे आगे चलकर मानव, मानवता, नैतिकता, सच्चरित्रता तथा स्वास्थ्य व सुसंस्कार आदि के निर्माण में यह नीतियाँ कितनी उपयुक्त सिद्ध होगी ?

ऋषि दयानन्द ने अपने जीते जी अपने साहित्य के संरक्षण का अधिकार उनके द्वारा स्थापित उत्तराधिकारिणी, 'परोपकारिणी सभा' को दिया था । तब ऋषि के साहित्य को सम्भालना व उनके विचारों को सुरक्षित रखना यह सारी जिम्मेदारी परोपकारिणी सभा पर आती है । सभा के पदाधिकारियों का ही यह अधिकार है । ऋषि के साहित्य की गलतियों को बताने व सुधार के बारे में सुझाव हम बाहर के लोग दे सकते हैं । उन्हीं को गलत बताकर उन्हीं के अधिकारवाला काम और वह भी गलत काम हम करें, तो या बराबर नहीं । इतना ही नहीं हम अच्छा भी करे तो परोपकारिणी सभा के माध्यम से ही करना चाहिए । तभी इसमें वैधानिकता व प्रामाणिकता रहेगी, अन्यथा ऋषि के ग्रन्थों को कोई भी छापकर पूरी तरह से उलटा-पुल्टा लिख देंगें, तो इसके परिणाम क्या निकलेंगे ? किसी समय कालुराम शास्त्री ने सत्यार्थ प्रकाश के नाम से पुस्तक छापी थी, उसमें सब पौराणिक विचार समाविष्ट किये थे । अत: कोई भी अलग-अलग भाषा में यह ग्रन्थ छापता हो, तो उसे मूल ग्रंथों से मिलान करके ही उसकी प्रामाणिकता सिद्ध की जा सकती है । यह काम ऋषि की उत्तराधिकारिणी, परोपकारिणी सभा का है, रहेगा और सबको उसे ही मानना चाहिए ।

ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित साहित्य के गलत अर्थ लगाना और उसकी दिशा बदल देना यह बहुत बडा अपराध है। 'ऋषि भी तो मनुष्य ही थे, उनकी गलतियाँ हम ठीक कर रहे हैं।' ऐसा कहना पूर्णत:

www.thearyasamaj.org

अनुचित हैं । वे मनुष्य अवश्य थे, किंतु गुण, कर्म, स्वभाव व साधना से ऋषि भी थे । उनकी ऊँचाई सर्वाधिक थी । महर्षि की महानता को भूल जाना यह किसका निर्दशक है ? सत्यार्थ प्रकाश का छठा समुल्लास राजधर्म विषय पर है और आर्य समाज का छठा नियम इन दोनों के भाव व उद्देश्य को बदलकर विपरीत अर्थ बताकर पूरे आर्य जगत् को भ्रमित किया गया । आर्य समाज ने राजनिति में भाग लेना या नहीं? इसपर विवाद खडा हुआ और दो गुट बन गये ।

जैसे आचार्य, ब्रह्मचारी, ग्रहस्थ, वानप्रस्थी, सन्यासी आदियों के धर्म (कर्तव्य) बतायें, वैसे ही ऋषि ने वेद व मनुस्मृति के आधार पर राजधर्म बताया है । महर्षि ने स्पष्ट रुप से आदेश दिया है कि लोककल्याण के लिए राजा और प्रजा मिलकर धर्मार्य सभा, राजार्य सभा और विद्यार्य सभा इनकी स्थापना करें । यह आदेश आर्य समाज को नहीं है । छठे नियम में 'संसार का उपकार करना यह उद्देश्य बताया है', किंतु उससे पहले व्यक्ति के लिए शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का क्रम बताया है । यदि यह क्रम छोड देंगें, तो सब कुछ बिगड जायेगा । जैसे कि आज आर्य जगत् बिगड गया है ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी अपूर्व दुरदर्शिता से वेदों के आधार पर सभी के कल्याण की बातें बता दी है। आज के जमाने में उनकी बातें भले ही कुछ अटपटी लगती हो, लेकिन उसमें बहुत बडे तथ्य हैं । नियोग विषय पर अनेक लोगों का विरोध रहा है । किंतु जिस उद्देश्य से नियोग किया जाता है, वह उद्देश्य दुनिया से कभी खत्म नही होगा । यह नियोग जाहिर रुप से, गुप्त रुप से नैतिकता के साथ या अनैतिकता के साथ भी होता ही रहेगा । आज भी पतिदेव संतान की उत्पत्ति में कमजोर हो, तो अपने पत्नी को अस्पताल ले जाकर नये तकनिकी पद्धति से वीर्यदान(Artificial insimation)करवा लेता है । तो क्या यह नियोग नहीं है ?

हमारे विद्वान केवल एकांगपूर्वक सोच रखते हैं । आत्मा व परमात्मा को न जानते हुए सृष्टिक्रम को पूर्णत: अनदेखा करते हुए व्यवहार करते हैं । परमात्मा का उद्देश्य आत्मा के कल्याण को छोडकर सोचने से ही कभी पूर्ण नहीं होगा । अन्यथा इसके परिणाम भयंकर निकलेंगें। मन, बुद्धि, इन्द्रिय तथा षड्रिपुओं को संयमित कर उनपर विजय पाने से तथा परमात्मा की व्यवस्था, न्याय व उसके उद्देश्य को जानने से ही मनुष्य का विवेक जागृत होता है । ईश्वर ने आत्मा के कल्याण के लिए ही यह सृष्टि बनायी है और वेद ज्ञान भी उसीके लिए दिया है । धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष इन चार पुरुषार्थों को बडे प्रयत्नों के

www.thearyasamaj.org

साथ जीवन में उतारने से ही हम सबका कल्याण होगा । इसी के लिए मानव योनि हम सब को प्राप्त हुई है । त्रिविध दुःखों से मुक्ति पाने के लिए हमें प्रयास करना होगा। जिन कार्यों के करने में आत्मा प्रसन्न होती है, वही धर्म व पुण्य है । तथा जिनके करने में आत्मा अप्रसन्न होती हो, वह अधर्म व पाप है । मानवीय मूल्यों को प्रामाणिकता से जीवन में धारण करने में आत्मा की प्रसन्नता है । साथ ही परमात्मा के सान्निध्य में बैठने व त्रिविध दुःखों से मुक्ति पाने में ही आनंद है । अतः इसी आत्मकल्याण के मार्ग को दुनिया तक पहुँचाना विद्वानों का कर्तव्य है। यह काम सत्य, नीति, न्याय, सबके सर्वकाल हित के आधार पर पक्षपात रहित होकर करते रहना विद्वानों का कर्तव्य है । दुनिया के आचार्य व विद्वान इस बात पर अवश्य विचार करें । महर्षि दयानन्द ने विश्व के विद्वानों को एकजुट होकर **'सारे संसार को आर्य बनाने'** का आवाहन किया था । यदि हम यह कार्य नहीं करेंगें, तो आनेवाला भविष्य हमें कभी माफ नहीं करेगा। आजकल अज्ञानी, पंथवादी व जाति के पक्षधर लोग कट्टर बनते जा रहे हैं । अपना साहित्य निर्माण कर रहे हैं । विचारों का प्रचार व प्रसार वे जमकर रहे हैं । यदि हम आर्य विद्वान अपने कर्तव्य से हट जाऐंगें, शुद्धाचरण नहीं करेंगे, आपस में प्रीतिपूर्ण व्यवहार नहीं करेंगे, आत्मसाधना का पथ नहीं अपनाऐंगें, तो हम कैसे आर्य विद्वान ?

अतः उपरोक्त बातों पर सकारात्मक विचार करते हुए ऋषि के सपनों को साकार करने के लिए तथा समय की माँग को सामने रखकर आगे बढेंगे, तो ही हम सबका सर्वथा कल्याण होगा ।

(लेखक महाराष्ट्र आर्य प्र.सभा के प्रधान हैं।)

– आर्य समाज, परली–वैजनाथ

मो.९४२१९५१९०४

-० सुभाषित ०- **सज्जन- वचनों के पक्के**

उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग्विभागे,
प्रचलति यदि मेरुः शीततां याति वह्निः।
विकसति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायां,
न भवति पुनरुक्तं भाषितं सज्जनानाम् ।।

भावार्थ – सूर्य चाहे पूर्व की अपेक्षा पश्चिम दिशा में उदय क्यों न हो ? पर्वत चाहे चलने क्यों न लग जावे ? अग्नि चाहे ठण्डी क्यों न हो जाये ? कमल चाहे पर्वत की कठोर शिला पर क्यों न खिल जाये ? किन्तु जो सज्जन लोग हैं, वे अपनी प्रतिज्ञा को, अपने दिये हुए वचन को नहीं बदलते, उस पर दृढ रहते हैं ।

www.thearyasamaj.org

अभिनन्दन समाचार

डॉ.वाघमारे साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बनें

प्रसिद्ध शिक्षाविद्, सामाजिक नेता व राज्यसभा के पूर्व सदस्य डॉ. जनार्दनराव वाघमारे को ३८वें मराठवाडा साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष बनाया गया है। औरंगाबाद जिले के **'सोयगांव'** ग्राम में इसी दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह में यह सम्मेलन हो रहा है। मराठवाडा साहित्य परिषद के सदस्यों की बैठक हाल ही में अध्यक्ष श्री कौतिकराव टाले पाटील की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने अध्यक्षपद पर डॉ.वाघमारे का सर्वसम्मति से चयन किया।

डॉ.वाघमारेजी महर्षि दयानन्द के अनुयायी माने जाते हैं। छात्रावस्था में वे आर्य समाज के सम्पर्क में आये। हैदराबाद में उच्च शिक्षा प्राप्त करते हुए उन्हें आर्य नेता पं.नरेन्द्रजी का सान्निध्य मिला। इन्हीं के सम्पर्क से उन्हें सामाजिक परिवर्तन की दिशा मिली। आर्य समाज के तत्वज्ञान से प्रभावित होने के साथ ही वे प्रगतिशील विचारधारा के भी अनुगामी है। शैक्षिक व सामाजिक सुधार आन्दोलन में उनका काफी योगदान रहा है। आर्य समाज के सुधारणावादी विचारों के प्रभाव के परिणामस्वरुप आपने परिवार के सभी सदस्यों के अन्तर्जातीय विवाह कराये।

श्री वाघमारे लब्धप्रतिष्ठ लेखक प्रवक्ता, विचारक व स्वच्छ प्रतिमावाले राजनेता हैं। वे लातूर के ख्यातिप्राप्त शिक्षालय राजर्षि शाहू महाविद्यालय के (प्रथम) यशस्वी प्राचार्य, स्वामी रामानन्द तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय के संस्थापक उपकुलपति, लातूर नगर के नगरपाल तथा राज्यसभा के सदस्य एवं अनेकों सभा-सम्मेलनों के अध्यक्ष व मार्गदर्शक रहे हैं। ऐसे सुयोग्य व्यक्तित्त्व की मराठवाडा साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षपद पर नियुक्ति होने पर उनका सर्वत्र अभिनन्दन हो रहा है। इस उपलक्ष्य में सभा के संरक्षक स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती, उपप्रधान श्री राजेन्द्र दिवे, पुस्तकाध्यक्ष प्रो.ओमप्रकाश होलीकर, अंतरंग सदस्य एस.आर.मोरे, आर्य समाज रामनगर के सदस्य श्रावण चिद्री, अनन्त लोखण्डे, दयानन्द जडे आदियों ने उनका अभिनन्दन किया। प्रान्तीय सभा की ओर से डॉ.वाघमारे जी का हार्दिक अभिनन्दन!

स्वामी सम्यक्‌जी को 'पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार'

प्रसिद्ध दार्शनिक लेखक व विद्वान पं.गंगाप्रसादजी उपाध्याय की स्मृति में दिये जानेवाले 'स्मृति पुरस्कार' के लिए इस वर्ष महाराष्ट्र के कर्मठ प्रचारक श्री स्वामी सम्यक् क्रान्तिवेशजी को चुना गया । दि.२० नवम्बर को इलाहाबाद(उ.प्र.) में आयोजित एक विशेष समारोह में यह पुरस्कार उन्हें प्रदान किया गया ।

श्री स्वामीजी द्वारा लिखित वेदज्ञान-अनुमोदित **'सम्यक् ज्ञान दर्शन'** इस मराठी ग्रंथ पर उन्हें यह पुरस्कार मिला है । इससे पूर्व भी बारामती-पुणे (महाराष्ट्र) के साहित्य संस्थान द्वारा प्रस्तुत ग्रन्थ को **'साहित्य रत्न'** पुरस्कार प्राप्त हुआ है ।

पूर्वाश्रमी के सम्भाजीराव पवार रहें स्वामी सम्यक् क्रान्तिवेशजी परभणी जिले की **'घटांग्रा'** ता.गंगाखेड नामक ग्राम के निवासी हैं । यहीं पर वे 'महर्षि दयानन्द धाम' आश्रम में रहकर वे स्वाध्याय, लेखन व प्रचारादि कार्य में संलग्न है । गत वर्ष वे गृहस्थाश्रम से सीधे सन्यासाश्रम में प्रविष्ट हुए । पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय स्मृति पुरस्कार मिलने पर उनका महाराष्ट्र आर्य प्र.सभा व आर्यजनों की ओर से अभिनन्दन ...!

शोक समाचार | आर्यसेवी श्री लदनियाजी का देहावसान

हिंगोली आर्य समाज के संस्थापक सदस्य एवं कर्मठ आर्यसेवी व्यक्तित्त्व श्री गुलाबचन्दजी घीसूलालजी लदनिया का २८ अक्टूबर २०१६ को रात्रि में १० बजे वृद्धावस्था से निधन हुआ । वे ९२ वर्ष के थे । वे अपने पीछे पत्नी धापाबाई, दो पुत्र सन्तोष एवं राजू तथा कन्या, दामाद, बहुएं व पौत्रादि छोड संसार से विदा हो गये ।

श्री लदनियाजी आर्य समाज, हिंगोली के वर्तमान प्रधान व महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक मण्डल के सदस्य थे । महर्षि दयानन्द की वैदिक विचारधारा में दृढ विश्वास रखते हुए उन विचारों पर चलने का उन्होंने आजीवन प्रयत्न किया। प्रखर वेदानुरागी श्री लदनियाजी का आर्य समाज हिंगोली के नवनिर्माण व संवर्धन में सराहणीय योगदान रहा है । व्यवसाय से शहर के प्रतिष्ठित कपडा व्यापारी के रुप में उन्होंने अच्छी साख जमाई थी। आर्य समाज के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक कार्य में भी वे अग्रणी रहे । दयानन्द एज्युकेशन सोसायटी की स्थापना में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस संस्था के वे संस्थापक सदस्य व वर्तमान तक अध्यक्षपद पर विराजमान रहें । इस संस्थाद्वारा हिंगोली के ख्यातिप्राप्त दो विद्यालय 'सरजूदेवी

भारुका कन्या विद्यालय' एवं 'माणकचन्द स्मारक विद्यालय' तथा अन्य २-३ शिक्षालय क्रियान्वित हैं । श्री लदनिया में परोपकार, दान, त्याग व समर्पण व सेवाभाव आदि गुण विद्यामान थे । उनके घर पर आये हुए अतिथियों की सेवा-सत्कार बडी श्रद्धा से होता रहा । हिंगोली आर्यसमाज, गुरुकुल परली तथा अन्य सेवाभावी संस्थाओं को आपने भरपूर आर्थिक सहयोग दिया है । महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा में उनके द्वारा स्थापित रु.१,११,१११/- की स्थिरनिधि से वेदप्रचार, योगासन व प्राणायाम प्रतियोगिताएँ चलती हैं । गत वर्ष लातूर में सभाद्वारा आयोजित आर्यसेवक गौरव समारोह में उनका तीन लाख रुपये की निधि देकर सम्मान किया गया । श्री लदनिया एक स्वाध्यायशील व मनस्वी व्यक्तित्व के धनी थे । जीवनभर आर्य सिद्धान्तों पर चलनेवाले श्री लदनियाजी सद्‌विचारों के मूर्तिमान आदर्श रहें । ऐसे ज्येष्ठ वैदिक धर्मी के चले जाने से मराठवाडा विभाग के आर्य समाज की काफी हानि हुई है ।

दिवंगत श्री लदनिया के पार्थिव पर दूसरे दिन प्रात: पूर्ण रीति से अन्तिम संस्कार किये गये । पं.वीरेन्द्र शास्त्री एक चन्द्रकान्त वेदालंकार ने यह संस्कार सम्पन्न कराया । इस अवसर पर हिंगोली व परिसर के आर्यजन, प्रतिष्ठित व्यापारी, राजकीय व सामाजिक कार्यकर्ता, दयानन्द एज्युकेशन सोसायटी के पदाधिकारी, सदस्य, अध्यापक, अध्यापिकाएं बडी संख्या में उपस्थित थे । प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेनजी राठौर अन्तेष्टि में सम्मिलित हुए ।

आर्य समाजों की उन्हें श्रद्धांजली !

आर्यश्रेष्ठी कृष्णचन्द्रजी आर्य नहीं रहे

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान, प्रसिद्ध समाजसेवी, कर्मठ आर्यश्रेष्ठी एवं आर्य समाज, पिम्परी-पुणे के आधारस्तंभ श्री कृष्णचन्द्रजी वेढारामजी आर्य (कर्मचन्दानी) का दि.१८ नवम्बर २०१६ को प्रात: १० बजे वार्धक्यकालीन रुग्णावस्था के कारण निधन हुआ । वे ९८ वर्ष के थे । उनके पश्चात् एक सुपुत्र, दो कन्याएं, दामाद पौत्र-दौहित्रादि परिवार है । एक पुत्र का तीन वर्ष ही निधन हुआ ।

श्री आर्यजी को बाल्यावस्था से ही वैदिक विचारों के शुभसंस्कार मिलें । पिता श्री वेढारामजी एक कर्मठ आर्य विचारक होने से घर में सदैव महर्षि दयानन्द के विचारों की छाया रहीं । देश के विभाजन के समय पाकिस्तान के सिंध प्रान्त से कई सिंधि परिवार भारत में आकर बसे । इनमें से कुछ परिवार पुणे में भी आये और यहां के पिम्परी इलाके में उद्योग व्यापारादि कार्य में संलग्न हुए । इनमें कृष्णचंद्रजी

www.thearyasamaj.org

सहित अन्य लोग भी विद्यमान थे। नगर के सदाशिवपेठ में सुदर्शन स्टेशनरी आर्ट एवं सुदर्शन पेपर इन्डस्ट्रीज के माध्यम से उद्योगजगत् में आपने बडे पुरुषार्थ से नाम कमाया सदाचार, सुमधुर व्यवहार, मिंलनसारिता, मृदुभाषिता एवं सादगीपूर्ण जीवन के माध्यम से आप 'पुणे' शहर में प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के रुप में सुपरिचित होते गये। आर्य समाज पिंपरी के निर्माण, उत्थान व उसकी गतिविधियों को संचालित करने में आप सदैव आगे रहें। वेदप्रचार, सोलह संस्कार व यज्ञप्रसार, संस्कार शिविर, आर्य वीरदल शिविर, शुद्धि संस्कार, वैदिक साहित्य प्रकाशन, वाचनालय, तथा विभिन्न सभा-सम्मेलनों के आयोजनों के माध्यम से आर्य समाज को समाजोपयोगी बनाने हेतु श्री आर्यजी ने भरसक प्रयत्न किये। अपने आर्य सहयोगी पदाधिकारियों व सदस्यों को साथ लेकर आर्य समाज को सुयोग्य दिशा देने में वे सदैव अग्रणी रहें। आर्य समाज द्वारा संचालित शिक्षा संस्थान द्वारा शिक्षण क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किये हैं। आर्य विद्यामन्दिर के अन्तर्गत प्राईमरी से लेकर वरिष्ठ महाविद्यालय तक के विभिन्न स्तर की शिक्षा व्यवस्था आज कार्यान्वित है, जिसमें हजारों छात्र-छात्राएं पढ रही हैं। श्री आर्यजी राजनीति में भी आगे रहें, किन्तु अपनी स्वच्छ प्रतिमा के साथ! ६ वर्ष तक पिंपरी चिंचवड महानगर पालिका में विरोधी दल नेता के रुप में कार्य करते हुए सामान्य जनता की समस्याओं को लेकर उन्होंने आवाज उठाई। १० वर्ष तक वे स्थानिक पार्षद भी रहें। वे उबावडा (सिंधी) पंचायत के भी १५ वर्ष तक अध्यक्ष रहें। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को आपने ६ वर्ष तक सम्भाला। इनके आदर्श जीवन व कार्य के मद्देनजर कई संस्थाओं द्वारा वे सम्मानित हुए। सन १९९५ में आपकी ७५वीं जन्मगाठ पर आयोजित अमृतमहोत्सव में रु.५ लाख रुपयें की गौरवनिधि प्रदान कर इनका भव्य नागरिक सम्मान भी किया गया। इस स्थिरनिधि के ब्याज से आर्य समाज पिम्परी में वेदप्रचारादि गतिविधियां चलती हैं। गतवर्ष सभा द्वारा लातूर में आयोजित गौरव समारोह में १ लाख रु. भेंट कर आपका 'ज्येष्ठ आर्यसेवक' के रुप में अभिनन्दन किया गया।

श्री कृष्णचन्द्रजी जैसी सच्छील, सात्विक, सुस्वभावी, कुशल आर्य संगठक के चले जाने से आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। उनके पार्थिव पर सर्वश्री पं.विश्वनाथजी शास्त्री, हेमन्त आर्य, विवेक आर्य, ऋषिपाल पाण्डे आदियों ने वैदिक रीति से अंतिम संस्कार किये। सभा के मन्त्री श्री माधवराव देशपाण्डे ने राज्य की सभी आर्य समाज की ओर से श्रद्धासुमन अर्पण किये।

***

सभी आर्य समाजों की ओर से श्रद्धांजली

www.thearyasamaj.org

॥ओ३म्॥

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश

मुक्तीनेच दुःखांचा नाश

वेदान्तविज्ञानसुश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्वाः।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे ॥

(मुण्डक उपनिषद् २/६)

जे लोक वेदान्त म्हणजे परमेश्वरप्रतिपादक वेदमंत्राचा खरा अर्थ पूर्णपणे जाणतात, जे सदाचारी आहेत आणि जे संन्यासयोगाने निश्चितपणे शुद्धांतःकरण संन्यासी बनलेले असतात, ते परमेश्वरामध्ये असलेल्या मुक्तीच्या सुखाला प्राप्त होतात. त्या सुखाचा उपभोग घेतल्यानंतर मुक्तीच्या सुखाचा अवधी पूर्ण होतो तेंव्हा तेथून सुटून ते जगात परत येतात. मुक्तीखेरीज दुःखाचा नाश होत नाही.

दयानंद वाणी

देशाचे तुकडे का झाले ?

'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।'

हे एका कवीचे वचन अगदी खरे आहे. जेव्हा विनाश होण्याचा काळ जवळ येतो, तेंव्हा बुद्धी फिरते आणि माणसे विपरीत कामे करु लागतात. कोणी त्यांना नीट समजाऊन सांगू लागला, तर ते त्याचा उलटाच अर्थ घेतात आणि कोणी वाईट उपदेश करु लागला तर त्यांना तो आवडू लागतो. महाभारत युद्धात मोठमोठे विद्वान राजे, महाराजे, ऋषी, महर्षी मारले गेले व पुष्कळसे आपोआप मरुन गेले, तेंव्हा विद्या व वेदोक्त धर्म यांचा प्रचार थांबला. लोक एकमेकांचा द्वेष व मत्सर करु लागले. ते घमेंडखोर बनले. **'बळी तो कानपळी'** असा व्यवहार सुरु झाला. जो बलवान बनला, त्याने मिळेल तेवढे राज्य घशात घालण्याचा सपाटा चालविला. त्यामुळे आर्यावर्त्त देशाचे तुकडे होऊन लहान लहान राज्ये तयार झाली.

(सत्यार्थप्रकाश-११ वा समुल्लास)

www.thearyasamaj.org

वरदक्षिणेच्या नावावर देवघेवीचा बाजार

– सौ.मालन अनंत रुद्रवार

आजकाल मुलीचे लग्न म्हणजे वधुपित्यापुढील एक महाभयंकर असा यक्ष प्रश्नच होऊन बसला आहे. त्याचे मुख्य कारण म्हणजे वरदक्षिणा ! अलीकडील काळात याला 'हुंडा' असे गोंडस नाव देण्यात आले. 'दक्षिणा' या शब्दाचा अर्थ तरी नीट समजतो का ? दक्षिणा कुणी कुणाला द्यायची असते ? एक तर पूजापाठ, धार्मिक विधी करणाऱ्या पुरोहिताला (व्यक्तीला) यजमानाने द्यावयाचे दान किंवा शिष्याने गुरुला द्यावयाचे दान ! विद्यादानाप्रीत्यर्थ दिलेले दान म्हणजे '**गुरु दक्षिणा!**' यातील कुठल्याही बाबीचा या वरदक्षिणेत समावेश नसतांनाही तरुण मंडळी या दानास पात्रच कशी ठरते ? हे कोडे कांही आम्हांला कधीच सुटले नाही.

आजच्या युगात शिक्षणाला प्राधान्य असल्यामुळे प्रत्येक मुलाला वाटते की, माझी पत्नी ही शिकलेली (सुशिक्षित) व कमावती असावी आणि यात वावगेही नांही. याचा अर्थ असा की स्त्री वर्गाची (स्त्री जातीची) शैक्षणिक व आर्थिक उन्नती व्हावी. आजकाल आई-वडील बऱ्याच बाबतीत मुलांना दोषी समजतात. त्या उलट तरुण देखील आई-वडिलांबर ढकलतात. मग वधूची पसंदी असो की हुंडा घेणे असो ! व्यक्तीस्वातंत्र्याच्या नावाखाली मुलांना धाकात ठेवायचे नाही व मुले पण मोठी झाल्यानंतर आई-वडिलांचे ऐकतातच असे नाही, किंबहुना ऐकतच नाहीत. हुंडा घेताना ते एवढा सुद्धा विचार करत नाहीत की, आपण स्वत:ला विकत आहोत. वधुपिता आपल्याला खरेदी करतात. एखाद्या वस्तु किंवा बाजारी वस्तुप्रमाणे ते स्वत:च्या जणू लिलाव किंवा सौदाच करतात म्हणाना! ज्याप्रमाणे जनावरांचा किंवा जागेचा किंवा एखाद्या वस्तूचा लिलाव करतात त्याप्रमाणे वर पिता आपल्या मुलाचा लिलावच करतात. जे वधुपिता जास्त रक्कम देतील तिकडे धावतात. इतर सौद्यात खरेदीदाराच्या अटी असतात. इथे तर विकणाऱ्याच्याच अटी असतात. त्या अटींवर पॉलीसीची आखणी करतात की, 'आमचा मुलगा इतका शिकला, त्याच्या शिक्षणाला इतका खर्च लागला. त्याप्रीत्यर्थ इतका हुंडा द्या.' जसे कांही यांनी मुलाला शिकविले ते सुद्धा वधु-पित्यावर उपकारच केले! त्यात त्यांचा कांहीच स्वार्थ नाही! जसे कांही मुलीच्या बापाला तिला वाढवताना, शिकवितांना कांहीच खर्च किंवा कष्ट पडले नाहीत. इतर सौद्यामध्ये खरेदीदाराला वस्तू मिळते. इथे तर 'बाबाही गेल्या आणि दशम्याही

www.thearyasamaj.org

गेल्या' या उक्तीप्रमाणे 'मुलगी ही गेली आणि पैसा ही गेला' आणि एवढे मान्य करुन सुद्धा मुलगी तरी सुखात असते का ? पैशावरचे भूत असलेले वरपिता केंव्हा एकदा मुलीचा घास करतील कांही नेम नाही !

दरोडेखोर किंवा ब्लॅकमेलर जसे वाटसरुला धमकी देतो की, 'ओरडलास तर जीवे मारीन.' त्याप्रमाणे वर पिता व सासरची मंडळी म्हणतात की, म्हणेल त्या प्रमाणे धन दौलत, चीज-वस्तू नाही दिल्या तर मुलीची कांही धडगत नाही आणि छळवाद सुरु होतो...!

वरपित्याला लग्न सुद्धा साध्या पद्धतीने चालत नाही. त्यांच्या शाही इतमामाला साजेशा थाटात लग्न झाले पाहिजे. असा त्यांचा अट्टाहास असतो. मग त्यात वधुपित्याचा प्राण का जाईना ! आणि या सर्व थाटामाटासाठी स्वत:ची तिजोरी भरलेलीच राहावी. वधुपिता कंगाल व्हावा ही सदिच्छा !

वास्तविक पाहता विवाह हा एक पवित्र संस्कार आहे. सोळा संस्कारांपैकी एक महत्त्वाचा संस्कार ! परंतू त्या संस्काराची पवित्रता तर कोठेच दृष्टीस पडत नाही. याउलट लग्न म्हणजे जणू कांही श्रीमंतीचे प्रदर्शनच ! विवाह म्हणजे अग्नीला साक्ष ठेवून वेदमंत्राचे उच्चारण करुन पवित्र अशा मधुर स्वरांच्या वातवरणातील वधु-वरांचे मीलन ! परंतू हे न होता कर्ण कर्कश दारुची आतषबाजी या नि अशा अनेक गोष्टींचा धुमाकूळ आणि हे सर्व कशासाठी तर केवळ संपत्तीच्या प्रदर्शनासाठी !

लग्न सोहळा संपल्यानंतर हे सर्व संपत नाही, तर भरीस भर म्हणून अंधश्रद्धेने, परंपरेने चालत आलेले आपले सणवार आणि त्यामागील खुळचट कल्पना, महाराष्ट्रात प्रामुख्याने चालणारे सण म्हणजे श्रावणातील नागपंचमी, राखी पौर्णिमा, मंगळागौर वगैरे-वगैरे.

जसे श्रावण महिन्यात नागाच्या पूजेला (नागपंचमीला) नाग हा भाऊ मानून त्याप्रीत्यर्थ त्याचे पूजन म्हणून बहीण (मुलगी) माहेरी आलीच पाहिजे व त्याबद्दल भावाने किंवा पित्याने तिला व जावयाला ऐपत नसतांना सुद्धा ऋण काढून का होईना बरेच कांही दिले पाहिजे. अशी सासरच्या मंडळींची अपेक्षा असते. त्याप्रमाणे अपेक्षांची पूर्तता झाली नाही तर मुलीच्या छळवादाला सुरुवात! आणि हे सर्व करुन वधूपित्याच्या वाट्याला काय येते तर फक्त लाचारी ! का ? तर तो मुलीचा बाप आहे. वास्तविक पाहता वधूपित्याचे मन मोठे मानून विवाह संस्कारात त्यांनाच मानाचे स्थान हवे! कारण १८ ते २० वर्षे होईपर्यंत मुलीचा सांभाळ करुन प्रेमाने वाढवून, मायेचे सर्व पाश तोडून तिला पतिगृही पाठवायची! ती सुद्धा आपला हक्क संपला, या नि:स्वार्थभावनेने! ही जरी जग रहाटी

www.thearyasamaj.org

असली तरी वधूपित्याच्या भावनेची पायमल्ली करणे म्हणजे कृतघ्नपणाच होय!

आम्हांस वाटते की, नवऱ्या मुलाच्या मनगटात एवढी ताकद नसेल, तर त्याने लग्नच का करावे ? स्वत:च्या चैनीखातर लग्न करणे व त्याची झळ वधूपित्याला! मला वाटते की बोहल्यात कांही जादू आहे की काय कोण जाणे ? एरवी उद्धट व आई वडिलांचे एकही अक्षर न ऐकणारा मुलगा वधू परीक्षेला निघाला की एवढा आज्ञाधारक होतोच कसा ? की बाप म्हणेल त्याप्रमाणे वागण्यास तो तयारच असतो. याचाच अर्थ असा होतो की मुलगा कितीही शिकला तरी तो सुसंस्कृत होत नाही. डॉक्टर, इंजिनिअर, वकील आणखी कांहीही झाला तरी त्याच्या मनातले बुरसट, खुळचट विचार आहेत, ते तसेच कायम आहेत आणि ते विचार तसेच कायम राहिले तर काय उपयोग त्या शिक्षणाचा? जे अन्यायाविरुद्ध बंड करून उठणार नाही ते शिक्षणच कसले?

याचाच अर्थ असा की, आजचे शिक्षण हे मानवाला सुसंस्कृत करु शकत नाही. धंदेवाईकपणा व सौदेबाजी शिक्षणात आल्यामुळे तर हा परिणाम होत नसेल ना ? याला कारणीभूत काय असेल तर आजचे धर्म व संप्रदाय व चालीरिती! बालपणापासून माणसाच्या (मुलांच्या) मनावर जे संस्कार व्हायला हवेत ते होतच नाहीत. घरात जे धार्मिक वातावरण पाहिजे किंवा वाचन व मनन पाहिजे, त्याचाच अभाव ! धार्मिक म्हणजे मूर्तींची पूजा करणे किंवा पुराणातील असंबद्ध अशा कथा ऐकणे नव्हे, थोर व्यक्तींच्या, राम-कृष्णाच्या चरित्राचा ठसा आपल्या मनावर न उमटवता त्यांच्या मूर्ती-पूजनातच जीवनाची इति कर्तव्यता मानतो. देवतेप्रमाणे, महापुरुषांप्रमाणे आचरण(वर्तणूक) न ठेवता राक्षसी वृत्तीने राहतो. आणि हे सर्व जर थांबावयाचे असेल तर त्यासाठी वैदिक संस्कारच मनावर व्हायला हवेत आणि हे संस्कार मनावर रुजविण्यासाठी आपल्याला पुन्हा एकदा वेद काळाकडे, ऋषिमुनींच्या काळाकडे धाव घ्यावी लागेल. वेदाकडे जाण्याचे एकमेव साधन, माध्यम म्हणजे शिक्षणामध्ये **'मूल्य संस्कार व संस्कृत'** भाषेला प्राधान्य देणे. जी सर्व भाषांनी जननी आहे. जन माणसांमध्ये वेदविद्येची गोडी निर्माण करणे. वेद विद्येची गोडी निर्माण करण्यासाठी आपल्याला 'महर्षि दयानंदांनी' घालून दिलेल्या मार्गानेच जावे लागेल. पर्यायाने आर्य समाजाची मतप्रणाली आत्मसात करावी लागेल, असे मला वाटते आणि या वैदिक संस्कृतीच्या संस्काराचा श्री गणेशा(पाया) हा दैनिक पंच महायज्ञ पद्धतीने सुरु करावा. यामुळे येणाऱ्या पीढीवरील कुसंस्कार होण्याचा धोका टळेल.

- मोंढा विभाग, माजलगांव
मो. ९४२२२४३०९५

www.thearyasamaj.org

विद्यापीठांमध्ये 'दयानंद अध्यासन' स्थापन होणार

प्रांतीय आर्य सभेकडून पंतप्रधान व यू.जी.सी.चे आभार

थोर क्रांतीकारी समाजसुधारक व वेदज्ञानाची दारे पुनश्च एकदा संपूर्ण जगातील मानवसमूहासाठी खुली करणारे विश्ववंद्य महर्षी दयानंद सरस्वती यांच्या नावाने देशातील सर्व विद्यापीठांमध्ये स्वतंत्ररित्या अध्यासन केंद्रांची स्थापना व्हावी, यासाठी देशाचे पंतप्रधान श्री नरेंद्रजी मोदी व केंद्रीय मनुष्यबळ विकास मंत्रालयाने विशेष प्रयत्न केले व यासंदर्भात विद्यापीठ अनुदान आयोगास सूचना दिल्या आहेत. त्यानुसार आयोगाने आपल्या देशातील सर्व विद्यापीठांकडून म.दयानंद अध्यासनांची (संशोधन केंद्रांची) स्थापना करण्यासाठी प्रस्ताव देखील मागविले आहेत.

वरील सूचनेप्रमाणे देशातील अनेक विद्यापीठांना त्या-त्या भागातील आर्य कार्यकर्त्यांनी व विद्वानांनी म.दयानंद अध्यासन केंद्र (चेअर) स्थापन करण्यासाठी निवेदने दिली आणि कांही विद्यापीठांनी आपले प्रस्ताव विद्यापीठ अनुदान आयोगाकडे पाठविले आहेत. औरंगाबाद येथील डॉ.बा.आं.मराठवाडा विद्यापीठात दयानंद अध्यासन केंद्र स्थापन करावे, यासाठी औरंगाबाद येथील आर्य कार्यकर्ते सर्वश्री पं.रमेश ठाकूर, ॲड.शिवाजीराव शिंदे, जगदीश सूर्यवंशी, दत्ता मुळे, डॉ.सुजाता करजगांवकर, डॉ.लक्ष्मण माने, प्रा.डॉ.मदन सूर्यवंशी आदींनी कुलगुरु प्रो.बी.ए.चोपडे यांना भेटून निवेदन दिले. तर नांदेडच्या स्वा.रा.तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठात **'दयानंद अध्यासन'** स्थापन व्हावे, याकरिता प्रांतीय आर्य प्र.सभेचे उपमंत्री प्राचार्य देवदत्त तुंगार, प्राचार्य डॉ.राजपाल पाटील, डॉ.शारदा तुंगार, श्रीमती मारमपल्ले, प्रा.मठवाले, प्रा.तांदळे, ओम कुरुडे, प्रियंका आदींनी तेथील कुलगुरु डॉ.पंडित विद्यासागर यांना भेटून निवेदन दिले. या कार्यात संस्थापक कुलगुरु व माजी खासदार डॉ.जे.एम.वाघमारे यांनी पाठपुरावा करण्याचे आश्वासन दिले आहे.

विशेष म्हणजे सर्व विद्यापीठांमध्ये स्वामी दयानंदांच्या नावे अध्यासन केंद्रे स्थापन व्हावीत, याकरिता परोपकारिणी सभेचे दिवंगत प्रधान स्व.आचार्य धर्मवीरजी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभेचे पदाधिकारी व देशातील अन्य आर्य नेत्यांनी पंतप्रधान श्री नरेंद्र मोदी व इतरांना भेटून मोठे प्रयत्न केले होते. त्यांच्याच पाठपुराव्यामुळे यू.जी.सी.ने विद्यापीठांकडून प्रस्ताव मागविण्याचा निर्णय घेतला आहे. या निर्णयाची प्रत्यक्ष अंमलबजावणी अजमेरमध्ये सर्वप्रथम झाली असून तेथील

www.thearyasamaj.org

'महर्षी दयानंद विद्यापीठा'त अशा प्रकारचे अध्यासन केंद्र नुकतेच सुरु झाले आहे. तर चंदीगढ येथील पंजाब विद्यापीठात दयानंद अध्यासन केंद्र यापुर्वीच स्थापन झाले आहे. अशा प्रकारची अध्यासन केंद्रे देशातील विविध विद्यापीठात सुरु झाल्यास स्वामी दयानंद यांच्या विचारांवर आधारित संशोधन कार्य होण्यास विद्यार्थ्यांना प्रोत्साहन मिळेल. या ऐतिहासिक शैक्षणिक निर्णयाबद्दल महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे संरक्षक स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती, प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनी, मंत्री माधवराव देशपांडे, कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर व इतर पदाधिकाऱ्यांनी देशाचे पंतप्रधान श्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय मनुष्यबळ विकास मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर, विद्यापीठ अनुदान आयोगाचे अध्यक्ष श्री.डॉ.वेदप्रकाश, सचिव डॉ.जसपाल संधू यांचे मन:पूर्वक आभार मानले तर याकरिता अहर्निश प्रयत्नशीलप्रो.डॉ.(स्व.) धर्मवीरजी यांच्या प्रती कृतज्ञता व्यक्त केली आहे.

अजमेरचा ऋषी मेळा उत्साहात

प्रो.धर्मवीरजींच्या आठवणींना उजाळा

अजमेर येथे परोपकारिणी सभेतर्फे महर्षी दयानंद सरस्वती यांच्या १३३ व्या बलिदानदिनानिमित्त आयोजित ऋषिमेळा कार्यक्रमाला आर्यजनांकडून अपूर्व प्रतिसाद मिळाला. दि.४, ५ व ६ नोव्हेंबरला अजमेरच्या पुष्कर रोडवरील ऋषी उद्यानात यानिमित्त विविध संमेलने, वैदिक विचार-चर्चासत्र, व्यायामप्रदर्शन आदी कार्यक्रम संपन्न झाले. परोपकारिणी सभेचे यशस्वी प्रधान व वैदिक प्रवक्ते डॉ.धर्मवीरजींचे गेल्याच महिन्यात अकाली निधन झाल्याने यावर्षीच्या ऋषिमेळ्यावर दु:खाचे सावट होते. नेहमी सर्वांच्या केंद्रस्थानी असलेले डॉ.धर्मवीरजी आर्यजनांच्या दृष्टिपथात नसल्याने सर्वांना सुनेसुने वाटत होते. अनेक आर्यजनांच्या चर्चांमधून एकच वाक्य ऐकावयास मिळे की, 'आज धर्मवीरजी राहिले असते तर... ?'

पहिल्या दिवशी सरस्वती भवनाच्या मैदानावर परोपकारिणी सभेचे उपप्रधान डॉ.सुरेंद्रकुमारजींच्या हस्ते 'ओ३म्' ध्वजारोहण करण्यात आले. यावेळी त्यांनी महर्षी दयांनदांची विचारसरणी सर्व जगात पसरविण्यासाठी आर्यजनांनी सतत प्रयत्नशील राहावे, असे आवाहन केले. दिवंगत डॉ.धर्मवीरजींना खरी स्मरणांजली त्यांच्या अपूर्व कार्यांना पूर्णत्वाकडे नेण्यात

www.thearyasamaj.org

आले, असेही ते म्हणाले. यावेळी सभेचे पदाधिकारी, संन्यासी वानप्रस्थी व कार्यकर्ते आणि श्रोते मोठ्या प्रमाणावर उपस्थित होते.

यानंतर मान्यवरांच्या हस्ते वैदिक चर्चासत्राचे उद्घाटन झाले, तर मुख्य सभामंडपात संमेलनास सुरुवात झाली. वैदिक चर्चासत्राचा विषय 'म.दयानंदांच्या तत्वज्ञानाचा मूलभूत आधार- वेद' असा ठेवण्यात आला होता. तसेच त्रिदिवसीय विविध संमेलनाचे विषय - "गोरक्षणाची गरज का ? कशासाठी ?" राष्ट्रनिर्मितीत आर्य समाजाची भूमिका, धर्मांतरण-आह्वान व उपाय, शिक्षणप्रणाली व देशचे भविष्य, युवकांची कर्तव्ये, गुरुकुलशिक्षणाची गरज, डॉ.धर्मवीरजी-कृतज्ञता संमेलन, दयानंदांच्या विचारांची प्रासंगिकता' असे ठेवण्यात आले होते. या सर्व संमेलनात आर्य विद्वानांनी अभ्यासपूर्ण विचार व्यक्त केले. दररोज सकाळी प्रसिद्ध वेदविद्वान आचार्य पं.सत्यानंदजी वेदवागीश यांच्या ब्रह्मत्वाखाली वेदपारायण यज्ञ संपन्न होत असे. ऋषि मेळ्यात येणाऱ्यांची आयोजकांनी उत्तम व्यवस्था केली होती. निवास व भोजनासह सर्वांशी आदरयुक्त व्यवहार अनुभवता आला.

या ऋषिमेळ्यात विद्वान सर्वश्री प्रो.राजेंद्रजी जिज्ञासू, डॉ.राजेंद्र विद्यालंकार, स्वामी संपूर्णानंदजी, आचार्य विजयपालजी, डॉ.रघुवीरजी वेदालंकार, विरजानंद दैवकरणी, डॉ.सुरेंद्रकुमारजी, पं.सत्यपालजी पथिक, पं.इंद्रजितदेवजी आर्य, आचार्या डॉ.सूर्यादेवी चतुर्वेदा, ब्र.नंदकिशोरजी, ११८ वर्षांचे संन्यासी स्वामी सर्वानंदजी आदी सहभागी झाले.

परोपकारिणी सभेवर श्रीमती ज्योत्स्नाजी

दरम्यान परोपकारिणी सभेच्या पदाधिकाऱ्यांच्या बैठकीत स्व.प्रो.डॉ. धर्मवीरजी यांच्या धर्मपत्नी श्रीमती ज्योत्स्नादेवी आर्य यांची सदस्य म्हणून सर्वसंमतीने निवड करण्यात आली आहे.

महाराष्ट्रातून बारा जण ऋषी मेळ्यात

अजमेर येथील या वर्षीच्या ऋषी मेळ्यात महाराष्ट्रातील जवळपास १२ जण सहभागी झाले. यात प्रांतीय सभेचे कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर, वैदिक गर्जनचे संपादक डॉ.नयनकुमार आचार्य, नांदेडचे लेखक नारायणराव कुलकर्णी, परळीचे आर्य कार्यकर्ते सर्वश्री रंगनाथराव तिवार, जयकिशोर दोडिया, अमृतमुनिजी, सोलापुरचे उत्तम मुनिजी, शिवणखेडचे विजयपाल कुल्ले व श्री आरदवाड, सुगांवचे अशोक कातपुरे, घटांग्राचे स्वामी क्रांतिवेश(पवार) यांचा समावेश होता. 'शिक्षणप्रणाली व भारताचे भविष्य' या विषयावरील संमेलनात श्री नयनकुमार आचार्य यांनी विचार मांडले, तर स्व.धर्मवीरजी कृतज्ञता संमेलनात त्यांच्यासह सभा कोषाध्यक्ष श्री राठौर उग्रसेन यांनी श्रद्धांजली वाहिली.

www.thearyasamaj.org

प्रेरक वार्ता

तामसा आर्य समाजाच्या नव्या वास्तूचे उद्‌घाटन संपन्न

'आर्य विचारांच्या प्रसाराची गरज' - प्राचार्य तुंगार

'शहरी भागापेक्षा ग्रामीण भागात वैदिक धर्माच्या प्रचार व प्रसाराची सर्वाधिक गरज आहे. कारण मानवीय मूल्यांची परंपरा मोठ्या प्रमाणात खेडेगावात असल्याने आर्यसमाजाचे सत्य सिद्धांत रुजण्यास येथे अनुकुल वातावरण असते. त्या दृष्टीने नांदेड जिल्ह्यातील तामसा हे गाव आर्य विचारांची जोपासना करणारे एक अग्रगण्य गाव मानले जाते. इथल्या पुंजप्पा कठाळे सारख्या धाडसी स्वातंत्र्य सैनिक मंडळींनी मोठी क्रांतीकारी कामे केली आहेत. आता नव्या वास्तूच्या माध्यमाने '**आर्य समाज**' आपले कार्य जोमाने करेल' असा आशावाद महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे उपमंत्री प्राचार्य श्री देवदत्त तुंगार यांनी व्यक्त केला.

नांदेड जिल्ह्यातील तामसा गावी दि.१४ नोव्हेंबर रोजी आयोजित आर्य समाजाच्या नूतन वास्तूच्या उद्‌घाटन सोहळ्यात प्रमुख पाहुणे म्हणून श्री तुंगार बोलत होते. अध्यक्षस्थानी आर्य समाज हदगावचे मंत्री व माजी नगराध्यक्ष श्री प्रभाकरराव देशमुख हे होते. तर कार्यक्रमास सर्वश्री विद्वान पं.राजवीरजी शास्त्री(सोलापुर), भजनीक पं.प्रतापसिंहजी चौहान(उदगीर), डॉ.नयनकुमार आचार्य, नारायणराव कुलकर्णी, यादवराव भांगे, सोममुनिजी, आर्यमुनिजी, यादवराव भांगे, रतनसिंह बगेरिया, गोविंदराव(बाबुराव) बंडेवार आदी उपस्थित होते. वरील मान्यवरांच्या शुभहस्ते व आर्य समाज तामसाच्या पदाधिकाऱ्यांच्या उपस्थितीत ८.५० लाख रु. खर्चून बांधण्यात आलेल्या नव्या इमारतीचे उद्‌घाटन करण्यात आले. यावेळी पं.प्रतापसिंह चौहान व पं.सोगाजी घुन्नर यांनी भजने सादर केली. तत्पश्चात् सर्वश्री राजवीर शास्त्री, कुलकर्णी, भांगे, सोममुनिजी आदींनी आपल्या भाषणातून शुभेच्छा दिल्या. तर श्री नयनकुमारजींनी 'आर्य' शब्दांची व्याख्या करुन त्यांचे आठ गुण कथन केले. आपल्या विस्तृत भाषणात श्री देवदत्त तुंगार यांनी तामसा आर्य समाजाचे ऐतिहासिक महत्त्व सांगून कार्यकर्त्यांनी केलेल्या कार्याबद्दल प्रशंसोद्‌गार काढले. यावेळी त्यांनी राजर्षी शाहू महाराज हे आर्य समाजी असल्याचे निःसंदिग्धपणे सप्रमाण सांगितले. "वेदोक्त" या ऐतिहासिक प्रकरणावर प्रकाश टाकून 'महाराजांनी आपल्या संस्थानात आर्य विचारांचा प्रसार जाणिवपूर्वक केला.

www.thearyasamaj.org

याकरिता त्यांनी तत्कालीन प्रतिगामी विचारांशी मोठ्या प्रखरतेने कसा लढा दिला', याविषयी विवेचन केले.

बंडेवार स्थिर निधीची घोषणा

याच कार्यक्रमात प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ते व आर्य समाज तामसाचे आधारस्तंभ (संरक्षक) श्री बाबुरावजी उर्फ गोविंदराव बंडेवार यांचा व जुने कार्यकर्ते श्री रतनसिंह बगेरिया यांचा सत्कार करण्यात आला. यावेळी श्री बंडेवार यांनी केलेल्या कार्याचा व त्यांनी आर्य समाजास दिलेल्या योगदानाच्या गौरवार्थ त्यांचे नांवे **'वेदप्रचार गौरव स्थिरनिधी'** संकलित करण्याचा निर्णय झाला. त्यांचे सुपुत्र श्री रविकुमार व स्नुषा सौ.जयश्री बंडेवार यांनी आपल्या कुटुंबियांच्या वतीने एक लाख रुपयांचा गौरवनिधी देण्याची घोषणा केली. उर्वरित निधी गावातून व कार्यकर्त्यांकडून जमविण्यात येईल. विशेष म्हणजे या इमारतीच्या बांधकामात सर्वाधिक आर्थिक मदत बंडेवार परिवाराकडून मिळाली आहे. त्याप्रीत्यर्थ सौ.व श्री बंडेवार यांच्यासह इतर दानदाते, प्रतिष्ठित राजकीय कार्यकर्ते आदींचाही यावेळी सत्कार करण्यात आला. दिवंगत शिक्षक श्री चौकटे गुरुजींना यावेळी उपस्थितांनी श्रद्धांजली वाहिली.

७ यजमानांच्या उपस्थितीत वास्तुप्रवेश यज्ञ

दरम्यान सकाळी पं.राजवीरजी शास्त्री यांच्या ब्रह्मत्वाखाली आर्य समाजाच्या नूतन वास्तूचा प्रवेश यज्ञ संपन्न झाला. यात अनुक्रमे सौ.शांताबाई व श्री रामराव चव्हाण, सौ.प्रतिभा व श्री रामसिंह बगेरिया, सौ.वंदना व श्री रघुसिंह भदोरिया, सौ.मीनाक्षी व श्री प्रमोद मेहेत्रे, सौ.संध्या व श्री संजय रंगदळ, सौ.जयश्री व श्री रविकुमार बंडेवार, सौ.उज्ज्वला व श्री ओमप्रकाश लाभशेठवार हे सात यजमान मोठ्या उत्साहात सहभागी झाले. शास्त्रीजींनी विधिवत वास्तुप्रवेश यज्ञ संपन्न केला.

दोन दिवस भजन-प्रवचन

या कार्यक्रमानिमित्त तामसा गावात दि.१३ व १४ नोव्हेंबर रोजी सकाळ-संध्याकाळ भजन व प्रवचनाच्या माध्यमाने प्रबोधनपर कार्यक्रम झाले. पं.राजवीरजी व पं.प्रतापसिंहजी यांनी 'ईश्वराचे स्वरुप व त्यांची खरी भक्ती, पारिवारिक सुख-शांती, वैदिक धर्माची शिकवण, अध्यात्माची गरज' आदी विषयांवर मार्गदर्शन केले.

कार्यकर्त्यांचे परिश्रम

हा द्विदिवसीय कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी तामसा आर्य समाजाचे पदाधिकारी सर्वश्री बाबुरावजी बंडेवार (संरक्षक), विश्वंभर कोठुले (प्रधान), संभाजी कल्याणे गुरुजी(मंत्री),तंवर

सर(कोषाध्यक्ष), रामराव चव्हाण, उत्तरवार, चिपुरवार, प्रमोद मेहेत्रे, संजय रंगदळ, रानबा गिरपे, नंदकुमार सोमनकर, रविकुमार बंडेवार, बगेरिया आदी कार्यकर्त्यांनी परिश्रम घेतले.

मुख्य कार्यक्रमाचे संचलन कल्याणे गुरुजी यांनी केले, तर अध्यक्षीय भाषणातून श्री प्रभाकरराव देशमुख यांनी आर्य समाजाची नवीन वास्तू ही आसन-प्राणायाम व सुसंस्काराचा प्रचाराची केंद्र बनावी, अशी अपेक्षा व्यक्त केली.

मान्यवरांची उपस्थिती

या भव्य कार्यक्रमास जि.प.सदस्य रमेशराव गंठलवार, माजी जि.प.सदस्य दिलीपराव बास्केवाड, सरपंच सौ.भारतीबाई बास्केवाड, शिक्षण संस्थेचे अध्यक्ष पंडितराव पाटील, व्यापारी संघाचे अध्यक्ष विजयकुमार लापसेटवार, पी.एस.आय.गोमारे यांच्यासह श्यामराव जंजाळ व कोंडबा भालेराव(आ.बाळापुर), भद्रे(येवली), अंबादास बुबडे(मरसुळ), श्रीमती कमलाबाई झंवर व देशमुख (हदगांव), सत्येंद्र चिंचोलीकर(नांदेड), निवृत्तीराव तंगडपल्ले(कंजारा) आदींची उपस्थिती होती. आयोजकांनी मोठ्या प्रयत्नांनी कार्यक्रमाला सफल केले.

शोकवार्ता

उमरगा आर्य समाजाचे प्रधान

माजी आ.भास्करराव पाटील यांचे निधन

उमरगा येथील आर्य समाजाचे संस्थापक प्रधान व माजी आमदार श्री भास्करराव उर्फ अण्णासाहेब चालुक्य यांचे बुधवार दि.७ डिसेंबर २०१६ रोजी मध्यरात्री १ वा. च्या सुमारास अल्पशा आजाराने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ९० वर्षे वयाचे होते. कांही दिवसांपासून वार्धक्यकालीन आजाराने त्यांच्यावर उपचार चालू हाते. त्यांचे पश्चात् श्री प्रदीपराव चालुक्य (आर्य समाजाचे वर्तमान प्रधान) यांचेसह चार मुले, सुना, नातवंडे असा परिवार आहे.

श्री चालुक्य यांच्यावर बालपणापासून आर्य समाजाच्या वैदिक विचारांचा प्रभाव होता. वडील श्री शिवरामपंत चालुक्य हे आर्य समाज चळवळीतील खंदे कार्यकर्ते व विचारांचे पक्के अनुयायी असल्याने म.दयानंदांच्या तत्वज्ञानाविषयी भास्कररावांना आकर्षण राहिले. यामुळेच राजकीय क्षेत्रात राहुनही शुद्ध शाकाहारी, निर्व्यसनी, सदाचारी व निष्कलंक

www.thearyasamaj.org

व्यक्तिमत्वाची प्रतिमा कायमस्वरुपी टिकवून ठेवण्यात ते यशस्वी ठरले.

श्री चालुक्य काँग्रेस पक्षाचे ज्येष्ठ नेते आणि राजकारणातील मोठे प्रस्थ मानले जात. सर्वसामान्यांमध्ये मिळून-मिसळून राहत गोरगरिबांच्या प्रश्नांची सोडवणूक करण्याचे कार्य त्यांनी केले. १९६७, १९७२ व १९७८ अशा सलग तीन वेळा उमरगाच्या आमदार पदावर मोठ्या गौरवाने राहण्याचा मान त्यांनी मिळविला. देशाचे माजी उपपंतप्रधान व संरक्षणमंत्री यशवंतराव चव्हाण आणि माजी मुख्यमंत्री वसंतदादा पाटील यांचे ते विश्वासू सहकारी होते. त्यांनी लातूर व उस्मानाबाद जिल्ह्यातील विविध शासकीय व खाजगी क्षेत्रात विविध पदे भूषविली. त्यांनी ज्या पदांवर राहुन मोठे कार्य केले, त्यांची यादी अतिशय मोठी आहे.

उमरगा आर्य समाजाच्या स्थापनेत श्री चालुक्य यांचा सिंहाचा वाटा आहे. या संस्थेची उभारणी, संरक्षण व संवर्धनात ते सर्वाग्रणी होते. या संस्थेचे मार्गदर्शक व आधारवड म्हणून त्यांचा उल्लेख करता येईल. आर्य समाजाचे श्रावणी कार्यक्रम, सत्संग व इतर प्रचार-प्रसाराचे कार्य श्री चालुक्य यांच्या देखरेखीखाली होत असत. सर्व कार्यक्रमांना ते आवर्जून उपस्थित राहत. आर्य समाजाच्या बांधकामासाठी त्यांनी आपल्या पुतणी श्रीमती रुपाताई निलंगेकर(पाटील) या लातूरच्या खासदार असतांना त्यांच्या सांसदीय फंडातून आर्थिक निधी मिळविला व आर्य समाजासाठी नवी वास्तू उभी केली. इतर ही कार्यासाठी त्यांनी मोठ्या प्रमाणावर भरीव सहकार्य केले. पूज्य स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती यांच्याशी त्यांचे जिव्हाळ्याचे संबंध होते.

अशा एका स्वच्छ प्रतिमा असलेल्या आर्य व्यक्तिमत्वाच्या निधनामुळे आर्य समाज उमरगा व परिसराची अपरिमित हानी झाली आहे. दिवंगत भास्कररावांच्या पार्थिव देहावर पं.राजवीरजी शास्त्री, पं.विज्ञानमुनिजी, पं.गुणवंतराव पाटील, दिलीपराव गौतम, बबन आर्य, विष्णू खंडागळे आदींच्या पौरोहित्याखाली उमरगा जवळील त्यांचे जन्मगाव मौजे दाबका येथील शेतात पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी माजी मुख्यमंत्री शिवाजीराव पाटील निलंगेकर, खा.रवींद्र गायकवाड, आ.बसवराज पाटील आदींसह आर्य समाजाचे मंत्री प्रा.विठ्ठलराव जाधव, माधवराव चव्हाण, राजेंद्र पाटील, माधवराव माने इत्यादी उपस्थित होते.

दिवंगत श्री चालुक्य यांना महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा राज्यातील सर्व आर्य समाजाच्या वतीने भावपूर्ण श्रद्धांजली!

रणवीर सूर्यवंशी यांचे निधन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे संरक्षक पूज्य स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरुजी) यांचे पुतणे श्री रणवीर गुलचंद सूर्यवंशी यांचे शनिवार दि.२६ नोव्हेंबर २०१६ रोजी सायंकाळी ५ वा. च्या सुमारास हृदयविकाराच्या झटक्याने आकस्मिक निधन झाले. मृत्युसमयी ते ५२ वर्षे वयाचे होते.

त्याचे मागे आई, पत्नी, दोन मुले, एक मुलगी, सून, भाऊ असा परिवार आहे. श्री रणवीर हे पूज्य स्वामीजीं समवेत पुणे येथून लातूरकडे येत होते. राज्य परिवहन मंडळाच्या बसने प्रवास करीत असता उस्मानाबाद जवळील येडसीच्या परिसरात पोहोंचले असतांना प्रवासात त्यांना हृदयविकाराचा त्रास सुरु झाला व कांही वेळातच त्यांची प्राणज्योत मालवली. स्वामीजींनी मोठ्या धैर्याने येडसीच्या ग्रामीण रुग्णालयात रणवीरना दाखल केले. तेथून शासकीय अतिदक्षता वाहनाने उस्मानाबादच्या जिल्हा ग्रामीण रुग्णालयात त्यांची रवानगी झाली, पण डॉक्टरांनी तपासणी अंती मृत घोषित केले.

निधनाची दु:खद वार्ता समजताच जि.प.उस्मानाबाद चे उपशिक्षणाधिकारी व सूर्यवंशी यांचे निकटवर्तीय श्री शि.मा.जाधव औरादकर यांनी डॉक्टरांकरवी प्रेताचे ताबडतोब शवविच्छेदन मोठ्या प्रयत्नाने करवून घेतले व पार्थिव मूळ गावी औराद (ता.उमरगा जि.उस्मानाबाद) येथे रात्रीपर्यंत पाठविण्यात आले.

दुसऱ्या दिवशी सकाळी ११.३० वा. च्या सुमारास शोकाकुल वातावरणात पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी सभेचे वेदप्रचारअधिष्ठाता पं.श्री लक्ष्मणराव आर्य (परळीकर) यांनी सर्वांच्या वतीने तर पं.रघुरामजी गायकवाड यांनी आर्य समाज औराद तर्फे श्रद्धांजली वाहिली.

याप्रसंगी जि.प.चे माजी उपाध्यक्ष बाबा पाटील, गोविंद पवार, विलास पाटील, प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ.बी.एम.म्हेत्रे, डॉ.वीरेंद्र शास्त्री, विज्ञानमुनिजी, अमृतमुनिजी, गोपालमुनिजी, शि.मा.जाधव, प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी, देविदासराव कावरे, रंगनाथ तिवार, नयनकुमार आचार्य, माधवराव चव्हाण, प्रा.म्हाळप्पा दुधभाते, विजय बेळमकर, सुरेंद्रगीर गोस्वामी, नारायणराव बुन्ना, पं.राजवीरजी शास्त्री, पं.प्रतापसिंह चौहान

www.thearyasamaj.org

आदींसह निलंगा, लातूर, उस्मानाबाद, माडज, नाईचाकूर, परळी, गुंजोटी, उमरगा आदी ठिकाणचे आर्यजन उपस्थित होते.

गुरुजींचे सहाय्यक,आधार-रणवीर

स्व.रणवीर हे पू.गुरुजी स्वामीजींचे आधार होते.कोठे जावयाचे किंवा फिरावयाचे झाल्यास ते स्वामीजींच्या सोबत राहून काळजी वाहत असत. वाढत्या वयात गुरुजींना 'वाटाडे' म्हणून मदतीस सदैव तत्पर असणारे रणवीर अकाली निघून गेल्याचे दु:ख सर्वांना अनावर झाले आहे.

अनुरथ बस्तापुरे यांचे देहावसान

रेणापुर येथील आर्य समाजाचे कोषाध्यक्ष व हिंदी रक्षा आंदोलनात सहभागी झालेले खंदे आर्य विचारी व्यक्तिमत्त्व श्री अनुरथ हनुमंतराव बस्तापुरे यांचे गुरुवार दि.८ डिसेंबर रोजी पहाटे ५.३० वा. च्या सुमारास हृदयविकाराने आकस्मिक निधन झाले. मृत्युसमयी ते ७१ वर्षे वयाचे होते. त्यांचे मागे पत्नी पद्मीनबाई, दोन मुले, दोन मुली, सुना, जावई व नातवंडे असा परिवार आहे.

श्री बस्तापुरे हे आर्य समाजाचे एकनिष्ठ कार्यकर्ते आणि गावातील प्रतिष्ठित नागरिक म्हणून ओळखले जात. आर्य समाजाच्या कोणत्याही कार्यक्रमात त्यांचा मोठा सहभाग असे. ठिकठिकाणी आयोजित सभा, संमेलने व उत्सवात ते आपल्या सहकारी आर्यजनांसमवेत उपस्थित राहत. शांत, मनमिळावू, मितभाषी, सद्वर्तनी आणि सत्यनिष्ठ व्यक्तिमत्वाचे धनी श्री बस्तापुरे हे सर्वप्रिय व्यक्तिमत्त्व होते. पंजाब व हरियाणामध्ये १९५७ साली आर्य समाजातर्फे झालेल्या हिंदी रक्षा आंदोलनात ते आपल्या वडील बंधूंसह हिरीरीने सहभागी झाले होते. रेणापूर भागात आर्य विचारांच्या प्रचारात त्यांनी मोठे योगदान दिले आहे.

मागील आठवड्यात मोटार सायकल व खाजगी वाहन अपघातात ते जखमी झाले होते. लातूरच्या एका खाजगी रुग्णालयात ५-६ दिवस उपचार घेऊन ते बरे झाले होते. लातूरातील आपल्या कन्येच्या घरी विश्रांती घेत असतांनाच अचानक रक्तदाब वाढला व त्यातच त्यांची प्राणज्योत मालवली. स्व.बस्तापुरे यांच्या पार्थिवावर मृत्युदिनी सायं.६.०० वा. सुमारास अंत्यसंस्कार पं.ज्ञानकुमार आर्य व पं.प्रशांतकुमार शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी रामनगर लातूर व रेणापुर येथील आर्य समाजाचे कार्यकर्ते व गावकरी मोठ्या प्रमाणावर उपस्थित होते. तिसऱ्या दिवशी त्यांचे घरी मंत्री पद्माकर लोखंडे व वैद्यमुनी बंडे यांनी शांतियज्ञ संपन्न केला.

www.thearyasamaj.org

चौकटे गुरुजींचे निधन

नांदेड जिल्ह्यातील तामसा येथील आर्य समाजाचे संस्थापक सदस्य व त्या परिसरातील वेदप्रचारक श्री राजाराम माणिकराच चौकटे-गुरुजी यांचे मागील ११ जून २०१६ रोजी स.६.२५ वा. अल्पशा आजाराने निधन झाले. मृत्युसमयी ते ७८ वर्षे वयाचे होते. त्यांचे पश्चात् पत्नी श्रीमती सुलोचना, मुलगा वेदप्रकाश, दोन मुली सौ.दयावती नारायण हिंगरुपे व सौ.सुनिता परमेश्वर हिवाळे, सुन व नातवंडे असा परिवार आहे.

श्री चौकटे गुरुजी तामसा भागातील चालते-बोलते प्रचारक, पुरोहित व साधुवृत्तीचे सद्गृहस्थ होते. विविध ठिकाणी जि.प.शिक्षक म्हणून प्रामाणिकपणे ज्ञानदान करीत अनेक विद्यार्थी घडविले. तरुण वयातच नांदेड येथील वाजेगाव आश्रमात पू.शिवमुनिजी (जिन्दम) यांच्या सान्निध्यात आले व आर्य समाजी बनले. नांदेड आर्य समाजाद्वारे संचालित 'आर्य हिन्दी विद्यालया'च्या जडणघडणीतही त्यांचे योगदान होते. वैदिक तत्त्वज्ञानावर श्री चौकटे गुरुजींची अढळ निष्ठा होती. योग प्रशिक्षक म्हणून अनेक ठिकाणच्या शिबिरात भाग घेत शाळा-महाविद्यालयातील शिक्षक-प्राध्यापक व मुलांना ते योगासने व प्राणायाम शिकवित. तामसा सारख्या ग्रामीण भागात नामकरण, उपनयन, विवाह, अंत्येष्ठी इत्यादी संस्कार ही ते करीत असत. साधी राहणी, मितभाषिता, निःस्पृहवृत्ती, विरागी स्वभाव व स्वाध्यायशीलता आदी गुणांमुळे त्यांनी जनसामान्यात आपली स्वतंत्र ओळख निर्माण केली होती.त्यांच्या पार्थिवावर दुपारी पं.सोगाजी घुन्नर यांच्या पौरोहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

सर्व दिवंगतांना महाराष्ट्र सभा व आर्य समाजांची भावपूर्ण श्रद्धांजली...! आम्ही त्यांच्या कुटुंबियांच्या दुःखात सहभागी आहोत.

कार्यक्रम सूचना

टंकारा येथे २३,२४ व २५ फेब्रुवारीला ऋषिबोधोत्सव

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षी दयानंद सरस्वती यांचे जन्मस्थळ म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या गुजरात राज्यातील **'टंकारा'** या प्रसिद्ध ऐतिहासिक गावी दरवर्षाप्रमाणे याही वर्षी येत्या **दि.२३,२४ व २५ फेब्रुवारी २०१७** रोजी भव्य स्वरुपात **'ऋषी दयानंद जन्म व बोधोत्सव'** आयोजित करण्यात आला आहे. यानिमित्त विविध संमेलने, चर्चासत्र, प्रकाशन समारंभ, विद्यार्थ्यांच्या स्पर्धा व इतर कार्यक्रमांचे आयोजन होत आहे. तरी सर्वांनी सहभागी व्हावे, असे संयोजकांनी कळविले आहे.

www.thearyasamaj.org

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने,

सौ.तारादेवी व प्रा.जयनारायण मुंदडा(अ.नगर)

यांच्या गौरवार्थ

राज्यस्तरीय विद्यालयीन निबंध स्पर्धा - २०१६

निबंध स्वीकारण्याचा अंतिम दिवस-दि.१६ जानेवारी २०१७

विषय :- स्वामी दयानंदांच्या स्वप्नातील भारत

-: स्पर्धेचे नियम व अटी :-

१) या स्पर्धेत केवळ ८ वी ते १० वी वर्गात शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.

२) प्रत्येक विद्यालय व आर्य समाज संस्थेतर्फे अधिकाधिक निबंध विद्यालयाच्या संमतीपत्रासह पाठवावेत.

३) फुलस्केप कागदाच्या एकाच बाजूवर मराठी किंवा हिंदी भाषेतून विद्यार्थ्यांनी निबंध लिहावेत.

४) निबंध टंकलिखित किंवा संगणकीकृत असू नयेत.

५) स्पर्धकांनी स्वत:च्या सुवाच्य हस्ताक्षरात लिहिलेल्या निबंधाची शब्दमर्यादा २००० इतकी असावी.

६) स्पर्धकांव्यतिरिक्त इतर कोणीही निबंध लिहुन पाठविल्याचे आढळल्यास ते निबंध रद्द होतील.

७) परीक्षकांचा निर्णय सर्वांसाठी बंधनकारक व अंतिम राहील.

*** पारितोषिके :-** रु.१५००/- (प्रथम), रु.११००/- (द्वितीय), रु.७५०(तृतीय)

विजेत्या स्पर्धकांना वैदिक साहित्य व सहभागी स्पर्धकांना प्रमाणपत्रे देण्यात येतील.

*** स्पर्धा संयोजक -** लक्ष्मणराव आर्य-गुरुजी (९४२०२६९९२४),
प्रा.अरुण चव्हाण(९८९०३५५३४९)

निबंध पाठविण्याचा पत्ता : संयोजक, सौ.व.श्री मुंदडा राज्य विद्यालयीन निबंध स्पर्धा-२०१६,
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा, आर्य समाज, परळी-वैजनाथ-४३१५१५ जि.बीड

डॉ.ब्रह्ममुनी (प्रधान), *माधव के.देशपांडे* (मंत्री), *उग्रसेन राठौर* (कोषाध्यक्ष) व पदाधिकारी
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा, आर्य समाज, परळी-वैजनाथ जि.बीड

सुभाषित संदेश

सहा दोषांचा त्याग

षड्दोषा: पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता ।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥

या जगात कोणत्याही प्रकारचे ऐश्वर्य मिळवू इच्छिणाऱ्या माणसाने अधिक झोप, तन्द्रावस्था, भीती, क्रोध(राग), आळस आणि उशिरा काम करण्याची प्रवृत्ती या सहा दोषांचा त्याग करावा.

www.thearyasamaj.org

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने,

सौ.डॉ.विमलाबाई व डॉ.सु.ब.काळे(ब्रह्ममुनिजी)

यांच्या गौरवार्थ

राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन निबंध स्पर्धा - २०१६

निबंध स्वीकारण्याचा अंतिम दिवस-दि.१६ जानेवारी २०१७

विषय :- महर्षी दयानंद प्रतिपादित आदर्श समाजव्यवस्था

-: स्पर्धेचे नियम व अटी :-

१) या स्पर्धेत केवळ ११ वी ते पदवी अंतिम वर्षात (वर्गात) शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.

२) प्रत्येक महाविद्यालय व आर्य समाज संस्थेतर्फे अधिकाधिक निबंध पाठवावेत. सोबत महाविद्यालयाचे संमतीपत्र असावे.

३) फुलस्केप कागदाच्या एकाच बाजूवर मराठी किंवा हिंदी भाषेतून विद्यार्थ्यांनी निबंध लिहावेत.

४) निबंध टंकलिखित किंवा संगणकीकृत असू नयेत.

५) स्पर्धकांनी स्वत:च्या सुवाच्य हस्ताक्षरात लिहिलेल्या निबंधाची शब्द मर्यादा ३००० इतकी असावी.

६) स्पर्धकांव्यतिरिक्त इतर कोणीही निबंध लिहुन पाठविल्याचे आढळल्यास ते निबंध रद्द होतील.

७) परीक्षकांचा निर्णय सर्वांसाठी बंधनकारक व अंतिम राहील.

*** पारितोषिके :-** रु.२०००/- (प्रथम), रु.१५००/- (द्वितीय), रु.१०००(तृतीय)

विजेत्या स्पर्धकांना वैदिक साहित्य व सहभागी स्पर्धकांना प्रमाणपत्रे देण्यात येतील.

*** स्पर्धा संयोजक -** लक्ष्मणराव आर्य-गुरुजी (९४२०२६९९२४),
प्रा.अरुण चव्हाण(९८९०३५५३४९)

निबंध पाठविण्याचा पत्ता : संयोजक, सौ.व.श्री काळे राज्य महाविद्यालयीन निबंध स्पर्धा-२०१६,
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा, आर्य समाज, परळी-वैजनाथ-४३१५१५ जि.बीड

डॉ.ब्रह्ममुनी (प्रधान), *माधव के.देशपांडे* (मंत्री), *उग्रसेन राठौर* (कोषाध्यक्ष) व पदाधिकारी
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा, आर्य समाज, परळी-वैजनाथ जि.बीड

सुभाषित संदेश

वाईट गोष्टींपासून दूर रहा...!

नास्ति कामसमो व्याधिर्नास्ति मोहसमो रिपुः ।
नास्ति क्रोधसमो वह्निः पाशो लोभसमो न च ।।

कामवासनेसारखा दु:खदायक दुसरा रोग नाही. मोहासारखा महाभयंकर दुसरा शत्रु नाही. क्रोधासारखा दुसरा कोणताही अग्नी नाही आणि लोभासारखे इतर दुसरे कोणतेही बंधन नाही.

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज, तामसा(जि.नांदेड) के नूतन भवन का उद्घाटन समारोह

नये भवन के उद्घाटन अवसर पर सर्वश्री पं.राजवीरजी शास्त्री, प्राचार्य तुंगार, कुलकर्णी, बगेरिया, भांगे तथा आर्य समाज तामसा के पदाधिकारी आदि।

मुख्य समारोह में मार्गदर्शन करते हुए श्री सोममुनिजी। साथ में हैं पं.राजवीरजी, आर्य मुनिजी, बाबुरावजी बंडेवार व प्रभाकरराव देशमुख ।

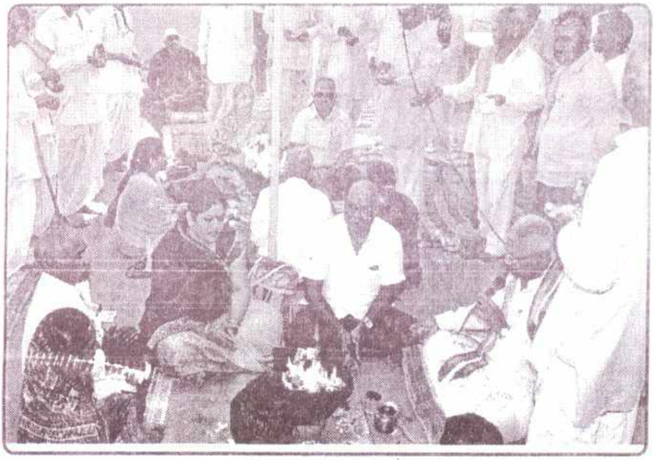

वास्तुप्रवेश यज्ञ के अवसर पर यजमानों को आशीर्वाद देते हुए ब्रह्मा पं.राजवीरजी शास्त्री एवम् आर्यजन ।

www.thearyasamaj.org

REG.No. MAHBIL/2007/7493 *Postal No. L/Beed/18/2015-17

सेवा में,

श्री

प्रेष

मन्त्री महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,

आर्य ज, परली वैजनाथ.

पिन ४ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

जीवेत् शरदः शतम् ।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म.प्रदेश में आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य दम्पती

श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य

(प्रसिध्द भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)

सौ.करुणादेवी आर्या

(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राणी, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)

के गौरव में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेंट !